महावीरप्रसाद द्विवेद

महाकवि-कालिदास-प्रणीत

मेघदूत

का

हिन्दी-गद्य में भावार्थ-बोधक अनुवाद ।

रचयिता

महावीरप्रसाद द्विवेदी

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

१९२५

द्वितीय बार] [मूल्य ।-)

भूमिका

कालिदास-प्रणीत मेघदूत के सम्बन्ध में, अगस्त १९११ की "सरस्वती" में, एक लेख प्रकाशित हो चुका है। उसमें मेघदूत की विशेषताओं की आलोचना है। वह इस छोटी सी पुस्तक की भूमिका का काम अच्छी तरह दे सकता है।
' का अधिकांश यहाँ पर नीचे उद्धृत करते हैं—
मेनी के कमनीय नगर में कालिदास का मेघदूत
वन के सदृश है जिसमें पद्यरूपी अनमोल रत्न जड़े
।, जिनका मोल ताजमहल में लगे हुए रत्नों से भी
। ईंट और पत्थर की इमारत पर जल-वृष्टि का
आँधी-तूफ़ान से उसे हानि पहुँचती है, बिजली
-भ्रष्ट भी हो सकती है। पर इस अलौकिक भवन
ी का कुछ भी ज़ोर नहीं चलता। न वह गिर
स सकता है, न उसका कोई अंश टूट ही सकता
और इमारतें जीर्ण होकर भूमिसात् हो जाती हैं;
भवन न कभी जीर्ण होगा और न कभी इसका
प्रत्युत इसकी रमणीयता-वृद्धि की ही आशा है।
ते कुबेर के कर्म्मचारी एक यक्ष ने कुछ अपराध
ने, एक वर्ष तक, अपनी प्रियतमा पत्नी से दूर
न्छ दिया। यक्ष ने इस दण्ड को चुपचाप स्वीकार

कर लिया। अलका छोड़ कर वह रामगिरि नामक पर्वत पर गया। वहाँ उसने एक वर्ष बिताने का निश्चय किया। आषाढ़ का महीना आने पर बादल आकाश में छा गये। उन्हें देख कर यक्ष का पत्नी-वियोग-दुःख दूना हो गया। वह अपने को भूल सा गया। इसी दशा में उस विरही यक्ष ने मेघ को दूत कल्पना करके, अपनी कुशलवार्ता अपनी पत्नी के पास पहुँचानी चाही। पहले कुछ थोड़ी सी भूमिका बाँध कर उसने मेघ से अलका जाने का मार्ग बताया; फिर सँदेशा कहा। कालिदास ने मेघदूत में इन्हीं बातों का वर्णन किया है।

मेघदूत की कविता सर्वोत्तम कविता का बहुत ही अच्छा नमूना है। उसे वही अच्छी तरह समझ सकता है और उससे पूरा पूरा आनन्द भी वही उठा सकता है जो स्वयं कवि है। कविता करने ही से कवि-पदवी नहीं मिलती। कवि के हृदय को—कवि के काव्यमर्म्म को—जो जान सकते हैं वे भी एक प्रकार के कवि हैं। किसी कवि के काव्य के आकलन करनेवाले का हृदय यदि कहीं कवि के ही हृदय-सदृश हुआ तो फिर क्या कहना है। इस दशा में आकलनकर्त्ता को वही आनन्द मिलेगा जो कवि को उस कविता के निर्म्माण करने से मिला होगा। जिस कविता से जितना ही अधिक आनन्द मिले उसे उतनी ही अधिक ऊँचे दरजे की समझना चाहिए। इसी तरह, जिस कवि या समालोचक को किसी काव्य के पाठ या रसास्वादन से जितना ही अधिक आनन्द मिले उसे उतना ही अधिक उस कविता का मर्म्म जानने वाला समझना चाहिए।

इस कविता का विषय—यहाँ तक कि इसका नाम भी

कालिदास के परवर्ती कवियों को इतना पसन्द आया है कि इसकी छाया पर हंस-दूत, पदाङ्क-दूत, पवन-दूत और कोकिल-दूत आदि कितने ही दूत-काव्य बन गये हैं ; यह इस काव्य की लोकप्रियता का प्रमाण है ।

कालिदास को इस काव्य के निर्म्माण करने का बीज कहां से मिला ? इसका उत्तर "इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा" - इत्यादि इसी काव्य में है —

"इतनो कहत तोहिं सम प्यारी ।
जिमि हनुमत को जनकदुलारी ॥
सीस उठाय निरखि घन लैहै ।
प्रफुल्लित चित ह्वै आदर दै है" ॥

यक्ष की तरह रामचन्द्र को भी वियोग-व्यथा सहनी पड़ी थी । उन्होंने पवनसुत हनूमान् को अपना दूत बनाया था । यक्ष ने मेघ को दूत बनाया । मेघ का साथी पवन है; हनूमान् की उत्पत्ति पवन से है । अतएव दोनों में पारस्परिक सम्बन्ध भी हुआ । यह सम्बन्ध काकतालीय सम्बन्ध हो सकता है । परन्तु मैथिली के पास रामचन्द्र का सँदेशा भेजना वैसा सम्बन्ध नहीं । बहुत सम्भव है, कालिदास को इसी सन्देश-स्मृति ने प्रेरित करके इस काव्य की रचना कराई हो । बहुत सम्भव है, यह मेघसन्देश कालिदासही का आत्म-सन्देश हो ।

कवियों की सम्मति है कि विषय के अनुकूल छन्दोयोजना करने से वर्ण्य विषय में सजीवता सी आ जाती है । वह विशेष खुलता है उसकी सरसता, और सहृदयों को आनन्दित करने की

शक्ति बढ़ जाती है। इस काव्य में शृङ्गार और करुण रस के मिश्रण की अधिकता है। यक्ष का सन्देश कारुणिक उक्तियों से भरा हुआ है। जो मनुष्य कारुणिक आलाप करता है, या जो प्रेमोद्रेक के कारण अपने प्रेम-पात्र से मीठी मीठी बातें करता है, वह न तो साँप के सदृश टेढ़ी मेढ़ी चाल चलता है, न रथ के सदृश दौड़-ताही है। अतएव उसकी बातें भुजङ्गप्रयात या रथोद्धता या और ऐसेही किसी वृत्त में अच्छी नहीं लगतीं। वह तो ठहर ठहर कर, कभी धीमे और कभी कुछ ऊँचे स्वर में, अपने मन के भाव प्रकट करता है। अतएव मन्दाक्रान्ता-वृत्त ही उसकी अवस्था के अनुकूल है। इस वृत्त के गुण इसके नाम ही से प्रकट हैं। यही जान कर कालिदास ने इस वृत्त का प्रयोग इस काव्य में किया है। और, यही जान कर, उनकी देखादेखी औरों ने भी दूत-काव्यों में इसी वृत्त से काम लिया है।

कवि यदि अपने मन का भाव ऐसे शब्दों में कहे जिनका मतलब, सुनने के साथ ही, सुननेवाले की समझ में आ जाय तो ऐसा काव्य प्रसाद-गुण से पूर्ण कहा जाता है। जिस तरह पके हुए अङ्गूर का रस बाहर से झलकता है उसी तरह प्रसाद-गुण-परिप्लुत कविता का भावार्थ शब्दों से झलकता है। उसके हृदयङ्गम होने में देर नहीं लगती। अतएव, जिस काव्य में करुणार्द्र-सन्देश और प्रेमातिशय-द्योतक बातें हों उसमें प्रसाद-गुण की कितनी आवश्यकता है, यह सहृदय जनों को बताना न पड़ेगा। प्यार की बात यदि कहते ही समझ में न आ गई—कारुणिक सन्देश यदि कानों की राह से तत्काल ही हृदय में न घुस गया—तो उसे एक प्रकार

निष्फल ही समझिए। प्रेमालाप के समय कोई कोश लेकर नहीं बैठता। करुणाक्रन्दन करनेवाले अपनी उक्तियों में ध्वनि और व्यङ्ग्य की क्लिष्टता नहीं लाने बैठते। वे तो सीधी तरह, सरल शब्दों में, अपने जी की बात कहते हैं। यही समझ कर महाकवि कालिदास ने मेघदूत को प्रसादगुण से पूर्ण कर दिया है। यही सोच कर उन्होंने इस काव्य की रचना वैदर्भी रीति में की है—चुन चुन कर सरल और कोमल शब्द रक्खे हैं।

देवताओं, दानवों और मानवों को छोड़ कर कवि-कुल-गुरु ने इस काव्य में एक यक्ष को नायक बनाया है। इसका कारण है। यक्षों के राजा कुबेर हैं। वे धनाधिप हैं। ऋद्धियां और सिद्धियां उनकी दासियां हैं। सांसारिक सुख धन ही की बदौलत प्राप्त होते हैं। जिनके पास धन नहीं वे इन्द्रियजन्य सुखों का यथेष्ट अनुभव नहीं कर सकते। कुबेर के अनुचर, कर्म्मचारी और पदाधिकारी सब यक्ष ही हैं। अतएव कुबेर के ऐश्वर्य्य का थोड़ा बहुत भाग उन्हें भी अवश्य ही प्राप्त होता है। इससे जिस यक्ष का वर्णन मेघदूत में है उसके ऐश्वर्यवान् और वैभव-सम्पन्न होने में कुछ भी सन्देह नहीं। उसके घर और उसकी पत्नी आदि के वर्णन से यह बात अच्छी तरह साबित होती है। निर्धन होने पर भी प्रेमी जनों में पति-पत्नी-सम्बन्धी प्रेम की मात्रा कम नहीं होती। फिर जो जन्म ही से धनसम्पन्न है—जिसने लड़कपन ही से नाना प्रकार के सुख-भोग किये हैं—उसे पत्नी-वियोग होने से कितना दुःख, कितनी हृदय-व्यथा, कितना शोक-सन्ताप हो सकता है, इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। ऐसा प्रेमी यदि दो चार दिन के लिए नहीं पूरे साल भर के लिए,

अपनी प्रेयसी से सैकड़ों कोस दूर फेंक दिया जाय तो उसकी विरह-व्याकुलता की मात्रा बहुत ही बढ़ जायगी। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। ऐसे प्रेमी का वियोगताप वर्षा में और भी अधिक भीषणता धारण करता है। उस समय वह उसे प्रायः पागल बना देता है। उसके प्रेम की परीक्षा उसी समय होती है। उसी समय इस बात का निश्चय किया जा सकता है कि इस प्रेमी का प्रेम कैसा है और वह अपनी प्रेयसी को कितना चाहता है। कालिदास ने इस काव्य में आदर्श-प्रेम का चित्र खींचा है। उस चित्र को सविशेष हृदयहारी और यथार्थता-व्यञ्जक करने के लिए यक्ष को नायक बनाकर कालिदास ने अपने कवि-कौशल की पराकाष्ठा कर दी है। अतएव, आप यह न समझिए कि कवि ने योंहीं, बिना किसी कारण के, विप्रयोग-शृङ्गार का वर्णन करने के लिए, यक्ष का आश्रय लिया है।

विषय-वासनाओं की तृप्ति के लिए ही जिस प्रेम की उत्पत्ति होती है वह नीच प्रेम है। वह निन्द्य और दूषित समझा जाता है। निर्व्याज प्रेम ही उच्च प्रेम है। निर्व्याज प्रेम अवान्तर बातों की कुछ भी परवा नहीं करता। प्रेम-पथ से प्रयाण करते समय आई हुई बाधाओं को वह कुछ नहीं समझता। विघ्नों को देख कर वह केवल मुसकरा देता है। क्योंकि इन सबको उसके सामने हार माननी पड़ती है। मेघदूत का यक्ष निर्व्याज प्रेमी है। उसका हृदय बड़ा ही उदार है। उसमें प्रेम की मात्रा इतनी अधिक है कि ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, हिंसा आदि विकारों के लिए जगह ही नहीं। यक्ष को उसके स्वामी कुबेर ने देश से निकाल दिया। परन्तु उसने, इस कारण, अपने स्वामी पर ज़रा भी क्रोध प्रकट नहीं किया। उसको

एक भी बुरे और कड़े शब्द से नहीं याद किया। उसकी सारी वियोग-पीड़ा का कारण कुबेर था। पर उसको निन्दा करने का उसे ख़याल तक नहीं हुआ। फिर, देखिए, उसने अपनी मूर्खता पर भी आक्रोश-विक्रोश नहीं किया। यदि वह अपने काम में असावधानता न करता तो क्यों वह अपनी पत्नी से वियुक्त कर दिया जाता। अपने सारे दुःख-शोक का आदि-कारण वह ख़ुद ही था। परन्तु, न, इसका भी उसे कुछ ख़याल नहीं। उसने अपने को भी नहीं धिक्कारा। वह धिक्कारता कैसे? उसके हृदय में इस प्रकार के भावों के लिए जगह ही न थी। उसका हृदय तो अपनी प्रेयसी के निर्व्याज-प्रेम से ऊपर तक लबालब भरा था। वहाँ पर दूसरे विकार रह कैसे सकते थे?

मेघदूत में कालिदास ने आदर्श प्रेम का चित्र खींचा है। निःस्वार्थ और निर्व्याज प्रेम का जैसा चित्र मेघदूत में देखने को मिलता है वैसा और किसी काव्य में नहीं। मेघदूत के यक्ष का प्रेम निर्दोष है। और, ऐसे प्रेम से क्या नहीं हो सकता? प्रेम से जीवन पवित्र हो सकता है; प्रेम से जीवन को अलौकिक सौन्दर्य प्राप्त हो सकता है; प्रेम से जीवन सार्थक हो सकता है। मनुष्य-प्रेम से ईश्वर-सम्बन्धी प्रेम की उत्पत्ति भी हो सकती है। अतएव कालिदास का मेघदूत करुण-रस से परिप्लुत है तो क्या हुआ। वह उच्च प्रेम का सजीव उदाहरण है।

जो ऐसे सच्चे प्रेम-मद से मत्त हो रहा है, जिसकी सारी इन्द्रियाँ अन्यान्य विषयों से खिँचकर एक-मात्र प्रेमरस में सर्वतोभाव से डूब रही हैं जिसके प्रेम-परिपूर्ण हृदय में और कोई सांसारिक

भावनायें या वासनायें आने का साहस तक नहीं कर सकतीं वह यदि अचेतन मेघ को दूत बनावे और उसके द्वारा अपनी प्रेयसी के पास अपना सन्देश भेजे तो आश्चर्य ही क्या है ? जो मत्त है और जो संसार की प्रत्येक वस्तु में अपने प्रेमपात्र को देख रहा है उसे यदि जड़-चेतन का भेद मालूम रहे तो फिर उसके प्रेम की उच्चता कैसे स्थिर रह सकती है ? वह प्रेम ही क्या जो इस तरह के भेद-भाव को दूर न कर दे। कीट-योनि में उत्पन्न पतिङ्गों के लिए दीप-शिखा की ज्वाला अपने प्राकृतिक दाहक गुण से रहित मालूम होती है। महाप्रेमी यक्ष को यदि मेघ की अचेतना का ख़याल न रहे तो इसमें कुछ भी अस्वाभाविकता नहीं। फिर, क्या यक्ष यह न जानता था कि मेघ क्या चीज़ है ? वह मेघदूत के आरम्भ ही में कहता है—

"धाम धूम नीर औ समीर मिले पाई देह
ऐसो घन कैसे दूत-काज भुगतावेगो-
नेह को संदेसो हाथ चातुर पठैवे जोग
बादर कहो जो ताहि कैसे के सुनावेगो।
बाढ़ी उत्कण्ठा जक्ष बुद्धि बिसरानी सब
याही सों निहोरयो जानि काज कर आवेगो-
कामातुर होत हैं सदाई मतिहीन तिन्हें
चेत औ अचेत माँह भेद कहाँ पावेगो" ॥

उस समय यक्ष को केवल अपनी प्रेयसी का ख़याल था। वही उसके तन और मन में बसी हुई थी। अन्य सांसारिक ज्ञान उसके चित्त से एक-दम तिरोहित हो गया था। वह एक प्रकार की समाधि

में निमग्न था। इस समाधिस्थ अवस्था में यदि उसने निर्जीव मेघ को दूत कल्पना किया तो कोई ऐसी बात नहीं कि जो समझ में न आ सके। कवि का काम वैज्ञानिक के काम से भिन्न है। वैज्ञानिक प्रत्येक पदार्थ को उसके यथार्थ रूप में देखता है। परन्तु यदि कवि ऐसा करे तो उसकी कविता का सौन्दर्य, प्रायः सारा का सारा, विनष्ट हो जाय। कवि को आविष्कर्ता या कल्पक समझना चाहिए। उसकी सृष्टि ही दूसरी है। वह निर्जीव को सजीव और सजीव को निर्जीव कर सकता है। अतएव मध्य-भारत से हिमालय की तरफ़ जाने वाले पवन-प्रेरित मेघ को सन्देश-वाहक बनाना अनुचित नहीं। फिर एक बात और भी है। कवि का यह आशय नहीं कि मेघ सच-मुच ही यक्ष का सन्देश ले जाय। उसने इस बहाने विप्रयुक्त यक्ष की अवस्था का वर्णन-मात्र किया है और उसके द्वारा यह दिखाया है कि इस तरह के सच्चे वियोगी प्रेमियों के हृदय की क्या दशा होती है; उन्हें कैसी कैसी बातें सूझती हैं, और उन्हें अपने प्रेमपात्र तक अपना कुशलवृत्त पहुँचाने की कितनी उत्कण्ठा होती है।

किसी का सन्देश पहुँचा कर उसकी पत्नी की प्राणरक्षा करना पुण्य का काम है। सज्जन ऐसे काम खुशी से करते हैं। क्योंकि संसार में परोपकार की बड़ी महिमा है। उसे करने का मौका मेघ को मिल रहा है। फिर भला क्यों न वह यक्ष का सन्देश ले जाने के लिए राज़ी होता। रामगिरि से अलका तक जाने में विदिशा, उज्जयिनी, अवन्ती, कनखल, रेवा, सिप्रा, भागीरथी, कैलास आदि नगरों, नदियों और पर्वतों के रमणीय दृश्यों का वर्णन कालिदास ने किया है। उन्हें देखने की किसे उत्कण्ठा न होगी? कौन ऐसा हृदयहीन होगा

जो उज्जयिनी में महाकाल के और कैलास में शङ्कर-पार्वती के दर्शनों से अपनी आत्मा को पावन करने की इच्छा न रक्खे? कौन ऐसा आत्मशत्रु होगा जो जङ्गल में लगी हुई आग को जल की धारा से शान्त करके चमरी आदि पशुओं को जल जाने से बचाने का पुण्य-सञ्चय करना न चाहे? मार्ग रमणीय, देवताओं और तीर्थों के दर्शन, परोपकार करने के साधन—ये सब ऐसी बातें हैं जिनके लिए मूढ़ से मूढ़ मनुष्य भी थोड़ा बहुत कष्ट खुशी से उठा सकता है। मेघ की आत्मा तो आर्द्र होती है; सन्तप्तों को सुखी करना उसका विरुद है—अतएव वह यक्ष का सन्देश प्रसन्नतापूर्वक पहुँचाने को तैयार हो जायगा, इसमें सन्देह ही क्या है। अपनी प्रियतमा को जीवित रखने में सहायता देनेवाले मेघ के लिए यक्ष ने जो ऐसा श्रमहारक और सुखद मार्ग बतलाया है वह उसके हृदय के औदार्य्य का दर्शक है। कालिदास ने इस विषय में जो कवि-कौशल दिखाया है उसकी प्रशंसा नहीं हो सकती। यदि मेघ का मार्ग सुखकर न होता—और, याद रखिए, उसे बहुत दूर जाना था—तो क्या आश्चर्य्य जो वह अपने गन्तव्य स्थान तक न पहुँचता! और, इस दशा में, यक्षिणी की क्या गति होती, इसका अनुमान पाठक स्वयं ही कर सकते हैं। इसी दुःखद दुर्घटना को टालने के लिए ही ऐसे अच्छे मार्ग की कल्पना कवि ने की है।

कालिदास के समय आदि के विषय में हमने रघुवंश के हिन्दी-अनुवाद की भूमिका में बहुत कुछ लिखा है। अतएव उन बातों को दुहराने की ज़रूरत नहीं। यहाँ पर हमें इतना ही निवेदन करना है

कि रघुवंश और कुमारसम्भव के अनुवाद की तरह इस अनुवाद में भी हमने कालिदास के आशय को ही प्रकट करने की चेष्टा की है। आंख मूँद कर शब्दार्थ का अनुसरण न करके केवल भावार्थ का अनुसरण किया है। आशा है, पाठक इस अनुवाद को भी पसन्द करेंगे।

दौलतपुर, रायबरेली
१ जून १९१५

महावीरप्रसाद द्विवेदी

मेघदूत।

पूर्वार्द्ध।

—:o:—
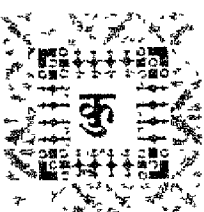
कुवेर की राजधानी अलकापुरी में एक यक्ष रहता था। वह अपने स्वामी कुवेर के यहाँ किसी पद पर अधिष्ठित था। अपनी प्रियतमा पत्नी पर उसका प्रेम असीम था। उसका मन सदा यक्षिणी में लगा रहता था। इस कारण, जिस काम पर वह नियत था वह उससे अच्छी तरह न होता था। उससे बहुधा भूलें हो जाया करती थीं। अतएव कुवेर को उसे डाँटना पड़ता था। इस डाँट-डपट का जब उस पर कुछ भी असर न हुआ तब कुवेर ने क्रोध में आकर उसे अपने यहाँ से निकाल दिया। उसने आज्ञा दी—

"जा, तू यहाँ से निकल जा। पूरा एक वर्ष तू कहीं बाहर जाकर रह। जिसके प्रेम-पाश में फँसे रहने के कारण तुझसे अपना काम नहीं होता उसके दर्शन भी तुझे अब एक वर्ष तक न होंगे। तेरे लिए यही दण्ड उचित है"।

यक्ष को विवश होकर कुवेर की इस आज्ञा का पालन करना पड़ा। उसकी सारी प्रतिष्ठा धूल में मिल गई। अलका छोड़ कर वह रामगिरि-पर्वत पर रहने चला गया। यह वही पर्वत है जहाँ वनवास

के समय राम-लक्ष्मण के साथ सीताजी कुछ समय तक रही थीं। इस पर्वत के जलाशयों में सीताजी ने स्नान भी किया था। इस कारण उनका जल अत्यन्त पवित्र है। रामगिरि सदा हरा भरा रहता है। उस पर तरह तरह की लताओं और तरुओं की बहुत अधिकता है। इस कारण उसके आश्रमों में सदा शीतल छाया बनी रहती है। ऐसे ही छायादार एक सुन्दर आश्रम में यक्ष रहने लगा।

उस पर्वत पर चले जाने से यक्ष की पत्नी उससे छूट गई। इस कारण उसे बड़ा दुःख हुआ। वह बेतरह दुबला होगया। उसका सारा शरीर सूख गया। नौबत यहाँ तक पहुँची कि बहुत दुबला हो जाने से सोने का रत्नजटित कड़ा उसके हाथ से गिर गया और उसे ख़बर भी न हुई। इस तरह वहाँ रहते उसे कई महीने बीत गये जब आषाढ़ का महीना लगा तब उसने देखा कि बादलों का समुदाय पर्वत के शिखर पर ऐसा लटक रहा है जैसे काला काला विशाल-काय हाथी किसी क़िले के परकोटे या दीवार को अपने मस्तक की ठोकरों से गिरा रहा हो। इस अनुपम प्राकृतिक दृश्य को वह बड़े चाव से देखने लगा। पर इससे उसका दुःख दूना होगया। उसे तत्काल ही अपनी प्रियतमा का स्मरण हो आया। उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा आईं। कुछ देर तक वह न मालूम मनही मन क्या सोचता रहा। अपने आगमन से केतकी को कुसुमित करने-वाले मेघों की घटा उमड़ने पर संयोगियों के भी मन की दशा कुछ की कुछ हो जाती है। फिर भला यक्ष के सदृश वियोगी का हृदय यदि उत्कण्ठित हो उठे और वियोगाग्नि से जलने लगे तो आश्चर्य हो क्या?

धीरे धीरे आषाढ़ बीत चला। सावन समीप आगया। तब यक्ष ने सोचा कि यक्षिणी के वियोग में मेरी तो यह दशा है, मेरे वियोग में उसकी, न मालूम, क्या दशा हो। ऐसा न हो जो कहीं वह प्राण ही छोड़ दे। अतएव अपने कुशल-समाचार उस तक पहुँचाना चाहिए। लाओ, इस मेघ ही को दूत बनाऊँ। मेघ सब कहीं जा सकता है। यह सोच कर उसने कुछ जङ्गली फूल तोड़े। उन्हें अञ्जली में लेकर वह मेघ के सामने खड़ा हुआ। फिर इन्हीं फूलों का अर्घ देकर उसने प्रेमपूर्वक मेघ का स्वागत किया। तदनन्तर वह उस मेघ से प्रीतिपूर्ण बातें करने लगा।

ज़रा इस यक्ष की नादानी को तो देखिए। आग, पानी, धुवें और वायु के संयोग से बना हुआ कहाँ जड़ मेघ और कहाँ बड़े ही चतुर मनुष्यों के द्वारा भेजा जाने योग्य सन्देश! परन्तु वियोग-जन्य दुःख से पागल हुए यक्ष ने इस बात का कुछ भी विचार न किया। उत्सुकता और आतुरता के कारण उसे इस बात का ध्यान ही न रहा कि बेचारा मेघ भला किस तरह सन्देश ले जायगा। बात यह है कि जिस दशा में यक्ष था उस दशा को प्राप्त होने पर लोगों की बुद्धि मारी जाती है। वे चेतन और अचेतन पदार्थों का भेद ही नहीं जान सकते। अतएव जो काम जिसके करने योग्य नहीं उससे भी उसे करने के लिए वे प्रार्थना करने लगते हैं।

यक्ष ने कहा—भाई मेघ! पुष्करावर्तक नामक विश्व-विख्यात मेघों के वंश में तो तेरा जन्म हुआ है। इन्द्र का तू सदा-सर्वदा का साथी है। शक्ति तुझमें ऐसी है कि जैसा रूप तू चाहे वैसा ही धर सकता है—छोटा, बड़ा, लम्बा, चौड़ा होजाते तुझे देर ही नहीं

लगती। मुझ पर दया कर। मैं सचमुच ही दया का पात्र हूँ। दुर्दैव ने मुझे यहाँ घर से बहुत दूर लाकर डाला है। मेरी चिर-सङ्गिनी यक्षिणी मुझसे छूट गई है। मेरे दुःख की सीमा नहीं। और, दुखिया का दुःख दूर करना सज्जनों का काम ही है। इसी से मैं तुझसे एक याचना करना चाहता हूँ। भले आदमियों से की गई याचना यदि न भी सफल हो तो भी अच्छी है, पर नीचों से की गई याचना यदि सफल भी हो जाय तो भी अच्छा नहीं। नीचात्मा जनों से कभी याचना ही न करना चाहिए। तू उच्चात्मा है—तू सदा ऊँचा रहता है—इसी से सङ्कोच छोड़ कर मुझे तुझसे एक प्रार्थना करनी है। तू सन्तप्तों का ताप दूर करने-वाला है। ताप से तपे हुए प्राणी सदा तेरी ही शरण जाते हैं। अतएव, आशा है, मेरी प्रार्थना का स्वीकार करके, कुबेर के शाप से सन्तप्त हुए मुझ दुखिया की भी तू अवश्य ही सहायता करेगा।

भाई! मेरा सन्देश मेरी प्रियतमा पत्नी के पास अलकापुरी में पहुँचा दे। यह नगरी ऐसी वैसी नहीं; बड़ी सुन्दर है। बड़े बड़े यक्षराज वहाँ रहते हैं। उसके बाहरी बागीचों में प्रत्यक्ष शिवजी ठहरा करते हैं। उनकी स्थिति के समय उनके मस्तकवर्ती चन्द्रमा की चाँदनी से अलका के महल खूबही चमचमाते हैं। अतएव, यदि तू मेरी प्रार्थना मान लेगा तो एक पन्थ दो काज की लोकोक्ति चरितार्थ हो जायगी। इधर तो मेरा काम हो जायगा। उधर तुझे भी एक बड़ीही शोभाशालिनी नगरी देखने को मिल जायगी।

आकाश में जिस राह से पवन प्रयाण करता है उसी राह से तुझे जाता देख त्रिदशवासियों की वनितायें अपनी आँखें तेरी

तरफ़ उठायेंगी। पतियों से वियुक्त होने के कारण उनके मुँह पर केशों की लटें बिखरी होंगी। उन्हें हाथ से उठा उठा कर वे बड़े ही चाव से तुझे देखेंगी। उन्हें मालूम है कि तेरा आगमन होने पर कोई भी विदेशी अपनी प्रियतमा पत्नी से दूर नहीं रह सकता: वर्षा-ऋतु आते ही वह अपने घर चला आता है। अतएव, तुझे देख उनको दृढ़ विश्वास हो जायगा कि अब हमारे भी पति शीघ्रही घर आवेंगे। क्योंकि कौन ऐसा मूर्ख होगा जो तेरा आगमन होने पर भी अपनी वियोगविधुरा पत्नी के पास आने की इच्छा न करेगा? हाँ, यदि कोई पुरुष मेरे ही सदृश पराधीन हो तो बात दूसरी है। ऐसा मन्दभागी यदि अपने घर न आ सके तो इसमें उसका क्या अपराध?

आहा! तेरा रूप आँखों को कितना प्यारा है। तेरे नयन-सुभग सुरूप को देखने और तेरी सेवा से अपनी आत्मा को कृतार्थ करने के लिए, देख, ये बगलियाँ आकाश में पाँत की पाँत उड़ती चली आ रही हैं। तेरा आगमन होने पर ही ये गर्भवती होती हैं। इस कारण तुझ पर इनकी और भी अधिक प्रीति है। पवन भी, इस समय, तेरे सर्वथा अनुकूल है: वह धीरे धीरे चल रहा है। तुझे उसका ऐसा ही मन्द-गमन पसन्द भी है। चातक भी बड़े गर्व से तेरे बायें बोल रहा है; उसका मधुर रव कानों को बहुत ही सुखदायी है। देख तो कैसे अच्छे अच्छे शकुन हो रहे हैं। अतएव, अब तुझे चलही देना चाहिए; देर न करना चाहिए।

इन शकुनों से मैं अनुमान करता हूँ कि मार्ग में तेरी गति का रोधक कोई कारण न उपस्थित होगा और तू अपनी भाभी

(अर्थात् मेरी पत्नी) को अवश्य ही जीती पावेगा। वह पूरी पतिव्रता है। मेरे आने के एक एक दिन गिनती हुई वह बेचारी किसी तरह अपने प्राणों की रक्षा करती होगी। स्त्रियों का स्नेह-शील हृदय फूल के सदृश कोमल होता है। ज़रा से आघात से ही वह चूर्ण हो सकता है। एक-मात्र आशा ही उनके उस कुसुम-कोमल हृदय को कुम्हलाने से बचाती है। अपने प्रेमी से फिर मिलने की यदि आशा न हो तो उनका जीना ही असम्भव हो जाय।

अकेले चलने से मार्ग जल्दी नहीं कटता; थकावट भी बहुत आती है। परन्तु तू इस बात से न डर। तुझे अकेला न जाना पड़ेगा। तू यह अवश्य ही जानता होगा कि तेरी गरज सुनते ही पृथ्वी खिल उठती है। उसके भीतर से सफ़ेद सफ़ेद फूल निकल आते हैं, जो छाते के समान सुन्दर मालूम होते हैं। उन्हें देख कर ऐसा जान पड़ता है जैसे पृथ्वी ने अपने ऊपर छाता ही तान रक्खा हो। तेरी जिस गरज की बदौलत पृथ्वी से छत्र-तुल्य ये फूल निकलते हैं उसी की बदौलत राजहंसों को मानस-सरोवर में जाने की इच्छा भी होती है। तेरी गड़गड़ाहट सुनते ही वे जान जाते हैं कि वर्षा आ गई; अब जलाशयों का जल गँदला हो जायगा। अतएव, मार्ग में खाने के लिए कमलनाल के तन्तुओं का पाथेय लेकर वे तेरे साथ ही साथ कैलास-पर्व्वत तक उड़ते चले जायँगे। मानस-सरोवर जाने की राह उसी तरफ़ से है न? अतएव, तुझे अनायास ही बहुत से साथी मिल जायँगे। यह भी तेरे लिए बहुत सुभीते की बात है।

अच्छा तो अब इस ऊँचे पर्वत का आलिङ्गन करके इससे तू बिदा माँग और चल दे। यह पर्वत ऐसा-वैसा नहीं। इसके ऊपर

रामचन्द्र ने बहुत समय तक वास किया था। इस कारण इसकी पीठ पर उनके वन्दनीय चरणों के चिह्न अब तक बने हुए हैं। इसके सिवा यह तेरा मित्र भी है। हर साल, वर्षा के आरम्भ में, तेरे बरसाये हुए जल का संयोग होते ही, चिर-वियोग से उत्पन्न हुए उष्ण-बाष्परूपी आँसू गिरा कर यह अपना स्नेह प्रकट करता है। अतएव, ऐसे पवित्र और सच्चे स्नेही से मिल-भेंट करही तुझे प्रस्थान करना चाहिए। ऐसा न करने से सदाचार की हानि होगी।

अच्छा तो अब मैं तुझे रास्ता बता दूँ। मेरा सब जाना बूझा है, और तू कभी पहले अलका गया नहीं। मेरे बताये रास्ते से यदि तू जायगा तो तुझे कुछ भी कष्ट न होगा। अतएव, पहले तो मैं तुझे अलकापुरी जाने का रास्ता बताऊँगा, फिर अपना सन्देश सुनाऊँगा। सन्देश की बात सुन कर घबराना मत। यह सन्देह न करना कि मेरा सन्देश शुष्क होगा। नहीं, वह तेरे ही सदृश सरस होगा। उसे तेरे कान पी सा लेंगे। उन्हें वह बहुत ही पसन्द होगा।

हाँ, मैं तुझसे यह कह देना चाहता हूँ कि बिना ठहरे बराबर लगातार चले ही न जाना। जहाँ थकावट मालूम हो वहाँ किसी ऊँचे पहाड़ पर पैर रख कर ठहर जाना और कुछ देर उसके ऊपर विश्राम करके तब आगे बढ़ना। चलने से भूख-प्यास बहुत लगती है और तुझे जाना है दूर। अतएव यदि तुझे क्षीणता मालूम हो—यदि तुझे भूख-प्यास लगे—तो पहाड़ी सोतों का निर्मल जल पीकर अपनी क्षीणता दूर कर लेना। उस जल के पान से तेरी तबीयत फिर हरी भरी हो।

आकाश-मार्ग से तुझे जाता देख सिद्धों की मुग्धा स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य होगा। चकित होकर वे बार बार अपना सिर ऊपर को उठावेंगी और आपस में कहेंगी कि कहीं यह किसी पर्वत का बड़ा भारी शिखर तो नहीं, जिसे हवा उड़ाये लिये जा रही है। मैं सच कहता हूँ, उनकी इस तरह की बातें सुन कर तुझे भी बड़ा कुतूहल होगा।

पानी अधिक बरसने से यह स्थान सदा आर्द्र रहता है। इसी से यहाँ बेत बहुत होता है। यहाँ से तू उत्तर की ओर जाना। दिग्गजों को इस बात का बड़ा घमण्ड है कि हमसे अधिक विशाल शरीरवाला संसार में और कोई नहीं। परन्तु जब वे नभोमार्ग में तुझे यहाँ से जाता देखेंगे तब उनका सारा घमण्ड चूर्ण हो जायगा। वे कहेंगे—अरे यह तो हमसे भी बड़ा है!

बाँबी से निकलनेवाला यह इन्द्रधनुष सामने ही कैसा सुन्दर मालूम होता है। जान पड़ता है, उस पर अनेक प्रकार के रत्नों की रङ्गीन छाया पड़ रही है। भाई, वाह! इस अनेक-रङ्गी धनुष के संयोग से तेरा श्यामल शरीर, मनोहर मोरपंखों के संयोग से गोपवेशधारी विष्णु के सदृश, बहुत ही शोभाशाली मालूम होगा।

मार्ग में तुझे मालभूमि मिलेगी, जहाँ खेती बहुत होती है। नये जुते हुए खेतों से वहाँ बड़ी ही हृदय-हारिणी सुगन्धि उड़ती होगी। उससे तेरी घ्राणेन्द्रिय परितुष्ट हो जायगी। देहाती स्त्रियाँ बहुत ही भोली भाली होती हैं। वे कटाक्ष करना नहीं जानतीं: भौंहें टेढ़ी करके देखना उन्होंने सीखा ही नहीं। हैं तो वे इतनी सीधी तथापि व यह बात अच्छी तरह जानती हैं कि खेती का

प्रधान सहायक तू ही है—खेती तेरे ही अधीन है। तू न हो तो खेतों में एक दाना भी पैदा न हो। अतएव, वे तुझे प्रीतिपूर्ण नयनों से देखेंगी और कहेंगी—"भले आये। बड़ी कृपा की।" उनके इन स्वागत-सूचक वचनों का अभिनन्दन करके तू ज़रा पीछे को मुड़ पड़ना और फिर झट पट उत्तर की ओर चल देना।

वहाँ से कुछ ही दूर आगे तुझे आम्रकूट नामक शिखरधारी पर्वत मिलेगा। पानी बरसा बरसा कर तूने इसके आतप-तप्त वनों का सन्ताप, न मालूम, कितनी दफ़े दूर किया है। इस प्रकार तूने पहलेही से उस पर बहुत कुछ उपकार कर रक्खा है। अतएव, राह का थका-माँदा जब तू उसके ऊपर पहुँचेगा तब वह बड़े आदर से तुझे अपने सिर पर बिठा कर तेरी थकावट दूर कर देगा। अपने ऊपर उपकार करनेवाला मित्र यदि दैवयोग से अपने घर आ जाय तो नीचात्मा भी भक्तिभाव-पूर्वक उसका आदर करते हैं—उससे विमुख नहीं होते—उच्चात्माओं का तो कहना ही क्या है। इस कारण आम्र-कूट जैसे उच्च शिखरवाले पर्वत के द्वारा तेरा सम्मान होना ही चाहिए। इस पर्वत के विषय में मुझे कुछ और भी कहना है। इसका आम्रकूट नाम सर्वथा सार्थक है। बात यह है कि इस पर आम के पेड़ों की बहुत अधिकता है। उनसे यह व्याप्त हो रहा है। इसी से यह आम्रकूट कहाता है। आज-कल आम पक रहे होंगे और पके हुए आमों से इसका प्रान्त-भाग पीला पड़ गया होगा। इस कारण, चमेली का तेल लगी हुई चिकनी वेणी के सदृश काला काला तू जब इसके पीतवर्ण शिखर पर बैठ जायगा तब ऐसा मालूम होगा मानों पृथ्वी के शुभ-काञ्चन-सदृश पयोधर के बीच में श्यामता

दिखाई दे रही है। देवाङ्गनाओं सहित देवता लोग इस अपूर्व दृश्य को देख देख कर बहुत ही प्रसन्न होंगे।

आम्रकूट के आगे चित्रकूट मिलेगा। उस पर भी बड़े बड़े शिखर हैं। मित्र मेघ! जब तू उसके सामने पहुँचेगा तब वह भी अपना अहोभाग्य समझेगा और तुझे थका देख अपने सिर पर बिठा लेगा। तू भी घोर वृष्टि करके उसकी निदाघ-ज्वाला को अच्छी तरह शान्त कर देना। इससे कृतोपकार का उसे तत्काल ही बदला मिल जायगा। सज्जनों के ऊपर किये गये सद्भावसूचक उपकार का फल मिलते कुछ भी देर नहीं लगती। चित्रकूट की कुञ्जों में वनवासी लोगों की बालायें मनमाना बिहार किया करती हैं। बहुत नहीं तो थोड़ी देर तू अवश्य ही उस पर ठहर जाना; तब आगे चलना। पानी बरसाने से तब तक तू हलका भी हो जायगा। अतएव, तू और भी अधिक वेग से चल सकेगा।

आगे तुझे नर्म्मदा नदी मिलेगी। बड़े ही विषम पत्थरों से टकराती हुई वह विन्ध्याचल के बीच से बहती है। दूर से वह तुझे काले काले हाथी के शरीर पर खरिया मिट्टी से खींची गई शृङ्गार-रेखाओं की रचना के समान दिखाई देगी। नर्म्मदा के किनारे किनारे, और कहीं कहीं मध्यवर्त्ती टापुओं में भी, जामुन के कुञ्जहीं कुञ्ज हैं। वे उसके जलप्रवाह के मार्ग में रुकावट पैदा करते हैं। इस कारण उसकी धारा रुक रुक कर बहती है। विन्ध्याचल में बड़े बड़े बनैले हाथियों की अधिकता है। उनके मस्तकों से मद टपका करता है। वे जब नर्म्मदा में जल-विहार करते हैं तब वह मद पानी में मिल कर उसे सुगन्धित कर देता है। अतएव, ऐसा

सुगन्धि-पूर्ण और धीरे धीरे बहनेवाला जल तू अवश्य पी लेना। चित्र-कूट में बरसने के कारण तेरे पास जल का सञ्चय रह भी थोड़ा हो जायगा। एक और भी कारण से नर्म्मदा में जल-ग्रहण करना तेरे लिए आवश्यक होगा। वह यह कि जलयुक्त होने से तू भारी हो जायगा। अतएव, तुझ पर वायु का कुछ भी ज़ोर न चलेगा। वह तुझे मनमानी दिशा में न ले जा सकेगा। मुझे विश्वास है, यह बात तू भी जानता होगा कि पूर्णता गौरव की सूचक है और रिक्तता लाघव की। ख़ाली चीज़ सदा ही हलकी होती है और भरी सदा ही भारी।

जहाँ जहाँ तू जल बरसावेगा वहाँ वहाँ कदम्ब के पेड़ खिल उठेंगे। हरे, पीले फूलों से वे लद जायँगे। उन फूलों के बीच में ऊपर को उठे हुए केसर (रुयें) बहुत ही भले मालूम होंगे। इन कुसुमित कदम्बों, और नदियों के कछारों में नई कलियाईं हुई कन्द-लियों, को देख कर मोरों के आनन्द की सीमा न रहेगी। जले हुए जङ्गलों में भूमि पर तेरा बरसाया हुआ जल पड़ने से जो सुन्दर सुगन्धि उड़ेगी उसे सूँघ कर भी वे बहुत प्रसन्न होंगे। अतएव, ऐसी आनन्ददायक सामग्री प्रस्तुत करने के लिए वे तेरे बहुत ही कृतज्ञ होंगे और तेरे आगे उड़ उड़ कर प्रसन्नतापूर्वक तुझे मार्ग बतावेंगे। इस कारण तुझे किसी से अलका का मार्ग पूँछना भी न पड़ेगा। तुझसे केवल मोरों ही को आनन्द की प्राप्ति न होगी। तू सिद्धों के भी आनन्द का कारण होगा। जब तू बरसने लगेगा तब चातक दौड़ दौड़ कर अपनी चोंचों में तेरे वारि-बिन्दु ग्रहण करेंगे और बगलियाँ पाँत बाँध कर आकाश में ख़ुशी ख़ुशी उड़ने लगेंगी। उस समय सिद्ध लोग चातकों को देख देख कर प्रसन्न होंगे और उड़ती हुई

बगलियों को गिन गिन कर उन्हें अपनी सहचरी सखियों को दिखावेंगे। यदि तू कभी ज़ोर से गरज देगा तो सिद्धों की सहचरियां डर कर कांप उठेंगी और सहसा अपने प्रेमियों के कण्ठों से लिपट जायेंगी। यह आलिङ्गन तेरी ही बदौलत प्राप्त हुआ जान, सिद्ध लोग तेरा बहुत उपकार मानेंगे।

यद्यपि मुझे विश्वास है कि मेरा सन्देश मेरी प्रियतमा तक पहुँचाने के लिए तू बहुत जल्द चलने की चेष्टा करेगा, तथापि, मुझे डर है कि कहीं पहाड़ों पर अर्जुन नाम के वृक्षों के फूलों की सुगन्धि तुझे मोह न ले और कहीं तू सुगन्धि के लोभ से बहुत देर तक न ठहर जाय। तेरे मार्ग में पहाड़ भी एक दो नहीं, कितने ही हैं और उन सब पर अर्जुन के पेड़ हैं। फिर, एक बात और भी है। शुक्ल और सजल-नेत्र-प्रान्तवाले मोर भी अपनी केकाओं के द्वारा तेरा स्वागत करेंगे। उनके स्वागत का स्वीकार करने के लिए यदि तू यह निश्चय करे कि यहाँ भी कुछ देर ठहर जाना चाहिए तो आश्चर्य नहीं। इन रुकावटों के कारण जल्द जाने में तू कैसे समर्थ होगा, यह मेरी समझ में नहीं आता। इसी से मेरे मन में यह सन्देह होता है कि कहीं तू इन जगहों में देर तक न रुका रहे।

आगे तुझे दशार्ण नामक देश मिलेगा। तेरे पहुँचने पर भी वहाँ हंस कुछ समय तक ठहरे रहेंगे। बात यह है कि वह देश पहाड़ी है। इस कारण वहाँ के जलाशयों का जल वर्षा में भी गँदला नहीं होता। दशार्ण में केतकी बहुत होती है। उसके बड़े बड़े सुन्दर फूलों से वहाँ के उपवनों के किनारे तुझे पीले पीले दिखाई देंगे। यह समय पक्षियों के लिए घोंसले बनाकर उनके भीतर रहने का

है। अतएव गावों के चारों तरफ़ उन्हें तू अपने अपने घोंसलों में कलोल करते पावेगा। अहा! आज कल तो परिपक्व फलों से लदे हुए जामुन के वृक्षों से वहाँ के वनों के बाहरी भाग श्यामही श्याम दिखाई देते होंगे। दशार्ण देश की राजधानी का नाम विदिशा (भिलसा) है। वह बहुत नामी नगरी है; देश-देशान्तरों तक में वह प्रसिद्ध है। वेत्रवती नदी उसके पास ही बहती है। उसके तीर पर तू ज़रा देर ठहर जाना और यदि शब्द ही करना हो तो धीरे धीरे करना। वेत्रवती का जल बहुत ही स्वादिष्ट है। वह लहरियों से सदा ही लहराया करता है। ऐसे चञ्चल तरङ्गवाले जल को, भ्रूभङ्ग-युक्त मुख के सदृश, पीकर तू कृतकृत्य क्या हो जायगा, तुझे तत्कालही रसिकता का बहुत बड़ा फल मिल जायगा।

विदिशा के पास ही नीचगिरि नाम का पर्वत है। वहाँ भी थोड़ी देर ठहर कर विश्राम कर लेना। उस पर कदम्ब के बड़े बड़े फूल खिले देख तुझे ऐसा मालूम होगा जैसे तुझसे मिलाप होने के कारण वह पर्वत पुलकित हो रहा है—कदम्ब-कुसुमों के बहाने वह अपने शरीर को कण्टकित कर रहा है। नीचगिरि पर सुन्दर सुन्दर शिला-गृह हैं। उनसे अङ्गनाओं के अङ्गराग और इत्र आदि की सुगन्धि आया करती है। यदि तेरी भी घ्राणेन्द्रिय को इस सुगन्धि का अनुभव प्राप्त हो तो समझ लेना कि विदिशा के रसिक युवक वहाँ विहार करने आते हैं।

नीचगिरि पर कुछ देर विश्राम करके आगे बढ़ना। मार्ग में तुझे पहाड़ी नदियों के किनारे किनारे बहुत से फूलबाग़ मिलेंगे। उनमें चमेली फूल रही होगी। उसे अपनी नई बूँदों से तू अवश्य

ही सींच देना । भूलना मत । वहां तू एक और भी काम करना । उन फूलबागों में मालिनें फूल तोड़ती होंगी । उनके कपोलों से गरम गरम पसीना निकल रहा होगा । उसने कानों पर रक्खे हुए फूल के गहने की कान्ति बिगाड़ दी होगी; वह पुष्पाभरण कुम्हला गया होगा । बेचारी मालिनें तङ्ग आकर बार बार पसीना पोंछती होंगी । अतएव, दया करके ज़रा देर उनके ऊपर छाया कर देना और उनसे जान-पहचान भी कर लेना ।

जाना तुझे है उत्तर दिशा को, क्योंकि अलका उसी तरफ़ है, और उज्जयिनी है कुछ पश्चिम में । इस कारण उस तरफ़ से जाने से तुझे फेर अवश्य पड़ेगा । परन्तु फेर पड़े तो पड़े; उज्जयिनी को जाना अवश्य । वहाँ के ऊँचे ऊँचे अभ्रंकष महलों को देखे बिना न रहना । वहां की कामिनियाँ बहुत ही रूपवती हैं । उनकी चञ्चल चितवन बड़ा काट करती है । जिस समय तू बिजली चमकावेगा उस समय उसकी चमक से उसकी आँखें चौंधिया जायँगी । अतएव, उनकी शोभा और भी अधिक हो जायगी । यदि तू उन विलासवती वनिताओं के कटाक्षों का निशाना न बना तो मैं यही समझूँगा कि तेरा जन्म ही व्यर्थ गया !

मार्ग में निर्विन्ध्या नाम की नदी बड़े प्रेम से तेरा स्वागत करेगी । तीर पर बैठे हुए हंसों की पंक्ति को वह तागड़ी के समान दिखावेगी और लहरों की हिलोरें लगने पर हंस जो मधुर शब्द करेंगे उसे वह तागड़ी के घुंघुरुओं की झनकार के समान सुनावेगी । तू देखेगा कि वह बल खाती हुई कैसी अनोखी चाल से जा रही है और भँवररूपी नाभि को किस अपूर्व कौशल से दिखा रहा है बात यह है कि

अपने प्रेमपात्र के सम्मुख हाव-भाव प्रकट करना ही स्त्रियों का पहला प्रणय-सम्भाषण है। अतएव तुझे लुभाने के लिए किये गये इन विलास-विभ्रमों का आनन्द लूटकर निर्विन्ध्या के रस-ग्रहण में कुछ भी संकोच न करना।

*निर्विन्ध्या के आगे तुझे सिन्ध नाम की नदी मिलेगी। तुझे ही वह अपने सौभाग्य का कारण समझती है। अतएव, तेरे वियोग में वह वियोगिनी बन रही होगी। तू स्वयं ही देखेगा कि विरहिणी वधू की वेणी के सदृश उसकी धारा पतली हो गई है और तटवर्ती तरुओं से गिरे हुए पुराने पत्तों से उसका रङ्ग पीला पड़ गया है। उसकी इस तरह की दयनीय दशा देख कर तू ऐसा उपाय करना जिसमें उसकी कृशता दूर हो जाय। तुझसे जलरूपी रस का दान पाने में उसका दुबलापन चला जायगा, यह तू समझ ही गया होगा।

आगे चल कर तू अवन्ती में पहुँच जायगा। वहाँ उदयन नाम का एक बड़ा प्रतापी राजा हो गया है। उसके बल, प्रताप और प्रभुत्व आदि की कथायें अवन्ती ही के नहीं, दूर दूर तक के गावों के भी वृद्ध जन अब तक कहा करते हैं। उस प्रसिद्ध अवन्ती नगरी से होकर परम सम्पत्तिशालिनी उज्जयिनी में पहुँच जाना। उसे देख कर तू कृतकृत्य हो जायगा। उसकी शोभा का वर्णन नहीं हो सकता। उसकी सुन्दरता और सम्पदा देख कर तेरे मन में यह भावना उत्पन्न हुए बिना न रहेगी कि वह स्वर्ग ही का तो एक टुकड़ा नहीं। मैं तो उसे ऐसा ही समझता हूँ। मुझे तो ऐसा मालूम होता है जैसे अपने पुण्य-प्रभाव से बहुत समय तक स्वर्ग का सुखोपभोग करने के अनन्तर बचे हुए पुण्य के प्रताप से पुण्यात्मा

लोग उज्जयिनी के रूप में स्वर्ग के ही एक कान्तिमान् खण्ड को पृथ्वी पर उठा लाये हैं।

उज्जयिनी शिप्रा नदी के तट पर बसी है। अतएव, नदी के जल के स्पर्श से वहाँ के पवन में सदा शीतलता रहती है। वह नायक के सदृश चतुर है। वह नायक ही की तरह अनुनय-विनय तथा सेवा-शुश्रूषा करना खूब जानता है। प्रातःकाल खिले हुए कमलों से मैत्री करके—उनसे मेल-मिलाप करके—उनकी सुगन्धि से वह सुगन्धित हो जाता है, मत्त मरालों के रव को वह और भी अधिक उन्नत कर देता है, स्त्रियों के कोमल कलेवरों पर उत्पन्न हुए श्रमजनित पसीने को वह सुखा भी देता है। मुझे आशा है, ऐसा रसिक और चतुर पवन तुझे भी अवश्यही आनन्द-दायक होगा।

उज्जयिनी की नारियाँ स्नान करने के अनन्तर सुगन्धित धूप जलाकर उसके धुवें से अपने गीले केशों को सुखाती हैं। वह सुरभि-सुन्दर धुवाँ महलों की खिड़कियों से सदा ही निकला करता है। उससे तेरा शरीर-विस्तार बढ़ जायगा—उसे यदि तू पी लेगा तो खूब परिपुष्ट हो जायगा—क्योंकि धुवेंही के अंश-विशेष से तो तेरा शरीर बना है। अतएव, उज्जयिनी के महलों के ऊपर पहुँचते ही तुझे अपने पुष्टि-साधन का अच्छा मौका मिल जायगा। इसके सिवा वहाँ तेरा आदर भी खूब होगा। वहाँ नागरिकों ने मोर पाल रक्खे हैं। वे तुझसे बन्धु-भाव रखते हैं। इस कारण ज्योंही तू वहाँ पहुँचेगा त्योंहीं वे नाच नाच कर तेरा स्वागत करेंगे।

शय्या, पूजा और शृङ्गार आदि के लिए रक्खे हुए फूलों से उज्जयिनी के महल सदाही सुगन्धित रहते हैं। उसकी छतें ललित-

लावण्यवती ललनाओं के पैरों में लगे हुए महावर के चिह्नों से चिह्नित भी रहती हैं। ऐसे सुन्दर और सुगन्धित महलों के ऊपर कुछ देर तू विश्राम कर लेना। इससे तेरे शरीर की सारी थकावट और मन की सारी खिन्नता दूर हो जायगी।

महलों पर थोड़ी देर सुस्ता कर तू त्रिभुवन के गुरु भगवान् भूतनाथ के पवित्र मन्दिर के अहाते में जाना; जो रङ्ग तेरा है वही श्रीकण्ठ के कण्ठ का भी है। रङ्ग की इस समता के कारण महादेवजी के गण तेरा बड़ा आदर करेंगे; यह मन्दिर एक मनोहर उद्यान में है। पासही गन्धवती नामक नदी है। शरीर में सुगन्धित उबटन लगाकर स्त्रियाँ उसमें जल-विहार करती हैं। इस कारण नदी का जल सुगन्धित हो जाता है। इस नदी में कमल भी बहुत खिलते हैं। उनके पराग-कण और जल की सुगन्धि अपने साथ लाकर पवन पूर्वोक्त उद्यान के वृक्षों को हिलाया करता है। अतएव इस बात का तू स्वयं ही अच्छी तरह अनुमान कर सकेगा कि मन्दिर के आस पास का प्राकृतिक दृश्य कितना सुहावना होगा।

एक बात की सूचना मैं यहां पर दे देना चाहता हूँ। वह बहुत ज़रूरी है। बात यह है कि यदि तू सायङ्काल होने के पहले ही महाकाल के मन्दिर में पहुँचे तो सूर्य्यास्त होने तक वहाँ ज़रूर ठहरे रहना। क्योंकि सायङ्काल वहाँ शिवजी की पूजा बड़े ठाठ से होती है। पूजन के समय शिवजी को प्रसन्न करने का तुझे अच्छा अवसर मिलेगा। पूजन आरम्भ होते ही तू मन्द मन्द गर्जने लगना। तेरी वह गरज दुन्दुभी या नक्कारे का काम देगी।

अतएव, शिवजी अपनी इस सेवा का तुझे अवश्यही फल देंगे। देख, चूकना मत । इस बात को याद रखना ।

शिवजी की शुश्रूषा करने और उन्हें रिझाने के लिए महाकाल के मन्दिर में नर्तकी नारियाँ भी रहती हैं । उनमें से कुछ तो शिवजी को अपना नाच दिखाती हैं और कुछ उन पर रत्न-खचित डाँड़ीवाले चमर ढारती हैं । जिस समय वे नाचती हैं उस समय फ़र्श पर ज़ोर से उनके पैर पड़ने के कारण उनकी कटि-किङ्किणियां बड़ाही श्रुतिसुखद शब्द करती हैं । चमर वे ऐसे लीला-ललाम ढँग से ढारती हैं कि देखते ही बनता है । चमर चलाते चलाते वे थक जाती हैं, पर उनके हाथ फिर भी अपनी लीला दिखाते ही जाते हैं । उन नर्तकियों के नखक्षतों पर जब तेरे वर्षा-बिन्दु पड़ेंगे तब शीतलता पहुँचने के कारण उनको बहुत आराम मिलेगा और वे काले काले भौंरों की पंक्ति के सदृश अपने दीर्घ कटाक्षों से तुझे देखेंगी । वे मनही मन कहेंगी—"यह दयालु मेघ हमारे क्षतों को ठंढा करने के लिए अच्छा आ गया ।" इस प्रकार वे अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करेंगी ।

महाकाल के मन्दिर के चारों तरफ़, लम्बी भुजाओं के समान ऊँचे ऊँचे तरुओंवाले उद्यान के ऊपर, जब तू, सायङ्काल, मण्डल बाँध कर छा जायगा और तेरे उस नील मण्डल पर, नवीन जवा-पुष्प के सदृश सायङ्कालीन अरुणता का प्रतिबिम्ब पड़ेगा, तब बड़ा ही अलौकिक दृश्य दिखाई देगा । उस समय तू रुधिर टपकते हुए नये गज-चर्म की समता को पहुँच जायगा । ताण्डव-नृत्य के समय-शिवजी को ऐसा ही चर्म्म ओढ़ने की इच्छा होती है । सो

तेरी बदौलत उनकी यह इच्छा भी पूर्ण हो जायगी और रुधिर टपकने के कारण वैसे गजचर्म्म से उमा को जो उद्वेग होता है वह भी न होगा। अतएव पार्वतीजी टकटकी लगाकर तुझे पौतिरर्ग नेत्रों से प्रसन्नतापूर्वक देखेंगी। मित्र मेघ! देख, तेरे लिए यह कितना अलभ्य लाभ होगा।

उज्जयिनी में स्त्रियाँ अपने प्रेमियों से मिलने के लिए बहुधा उनके निर्दिष्ट स्थानों को रात के समय जाया करती हैं। सावन-भादों में और तो क्या, राजमार्गों तक में अन्धकार छाया रहता है। तुझसे आकाश व्याप्त हो जाने पर तो वह अँधेरा और भी घना हो जायगा—यहाँ तक घना कि वह सूई से छिद जाने योग्य हो जायगा। अतएव, इतनी कृपा करना कि कसौटी पर सुवर्ण की रेखा के समान बिजली चमका कर उन अभिसारिकाओं को राह अवश्य दिखा देना। तेरे इस कार्य्य से अन्धकार को घना कर देने के अपराध का मार्जन हो जायगा। अकारण ही किसी को किसी से कष्ट पहुँच जाय तो उसका प्रतिकार करना ही सज्जनों का कर्तव्य है। हाँ, एक बात और है। रात को कहीं पानी बरसाने और गरजने न लगना। ऐसा करने से वे डर जायँगी, क्योंकि वे स्वभाव ही से भीरु हैं। फिर, किसी को व्यर्थ सताना भी तो न चाहिए। अन्धकार की वृद्धि करके गरजने और बरसने से तेरे अपराध की मात्रा और भी अधिक हो जायगी।

रात अधिक बीत जाने पर वहाँ किसी ऊँचे से महल की छत के ऊपर ठहर जाना। परन्तु महल ऐसा ढूँढ़ना जिस पर कबूतर आनन्द से सो रहे हों और इतनी भी खटक न होती हो कि वे

जाग पड़ें । थके-माँदे के लिए एकान्त स्थान ही अच्छा होता है। ऐसे स्थान में सुख से सोने को मिलता है । तब तक चमकते चमकते तेरी प्रियतमा सौदामिनी भी थक जायगी। इस कारण भी तुझे उज्जयिनी में एक रात अवश्य ही ठहरना पड़ेगा । प्रातःकाल होने पर फिर चल देना और यथासम्भव शीघ्र ही अवशिष्ट मार्ग का आक्रमण करना । जिसने अपने मित्र का कोई कार्य्य कर देने के लिए बीड़ा उठाया है उसे उसकी पूर्ति होने तक कल कहाँ ? उसे अधिक सुस्ताने के लिए समय ही नहीं ।

प्रातःकाल प्रणयी पुरुष घर आवेंगे और अपनी खण्डिता पत्नियों के आँसू पोंछ कर उनका दुःख दूर करेंगे । उधर भगवान् मरीचिमाली भी कमलिनियों के मुख-कमल से ओस के अश्रुओं का परिमार्जन करने के लिए लौटेंगे । अतएव, उनकी किरणों के मार्ग को हरगिज़ न रोकना । रोकने से एक तो वे तुझ पर अप्रसन्न होंगे, दूसरे खण्डिताओं तथा कमलिनियों का दुःख दूर होने में भी बाधा पहुँचेगी । समझ गया ?

उज्जयिनी छोड़ने पर तुझे गम्भीरा नाम की नदी मिलेगी । उसका जल प्रसन्नता-पूर्ण मन के सदृश निर्म्मल है । खिले हुए कुमुदरूप सुन्दर नयनों से वह तुझ पर चपल-मछली-रूप कटाक्षों की प्रेरणा करेगी । अतएव, जब तू उसके जलरूप स्वच्छ हृदय के भीतर अपनी प्रतिबिम्ब-रूप आत्मा का प्रवेश कर देगा तब तुझे वहाँ कुछ देर तक अवश्य ही रहना पड़ेगा । क्योंकि यह सम्भव ही नहीं कि तू उसके कटाक्षों को सफल किये बिना ही वहाँ से चल दे । इतनी कठोरता दिखाना—इतना धैर्य्य धरना—तुझसे होही

न सकेगा । इन बातों के सिवा और तरह से भी वह तुझे रिझाने की चेष्टा करेगी । तू देखेगा कि नीलाभ जल के बहाने उसने नीली साड़ी पहन रक्खी है । लहरों का उछाला हुआ उसका वह वारि-वसन, तटरूपी कटि से कुछ खिसक कर, बेंत की लटकी हुई डाल से लग रहा है । अतएव, वह हाथ से पकड़ सा रक्खा गया है । उसे इस दशा में देख तुझे ऐसा मालूम होगा जैसे घर से चलते समय पति अपनी अवस्त्रपतिका पत्नी का वस्त्र हाथ से खींच रहा है । इस कारण वह उसकी कमर से सरक गया है । भला ऐसी विलासवती नदी का नीला नीला नीर लेकर, कुछ देर वहाँ ठहरे बिना, तू कैसे प्रस्थान कर सकेगा ? औरों की तो मैं नहीं कहता, परन्तु ऐसा अवसर प्राप्त होने पर झटपट चल देना रसिकों के लिए अवश्य ही असम्भव है ।

गम्भीरा छोड़ने पर तुझे देवगिरि होकर जाना पड़ेगा । पहले पहल तेरे बरसने पर पृथ्वी से जो सुन्दर सुगन्धि निकलती है उससे सुरभि-सम्पन्न होनेवाली, जङ्गली गूलर के फलों को परि-पक्क करनेवाली, अपने झकोरों की मधुर ध्वनि से कानों को सुख देनेवाली, हाथियों की प्यारी वायु, उस समय, मार्ग में तेरी अच्छी सेवा करेगी । इस कारण पूर्वोक्त गम्भीरा के तट पर प्राप्त हुए तेरे परिश्रम का शीघ्र ही परिहार हो जायगा । देवगिरि में कुमार कार्तिकेय का मन्दिर है । इन्द्र की सेनाओं की रक्षा के लिए शशिमौलि शङ्कर ने आदित्य से भी अधिक तेजस्वी अपने जिस तेज को अग्नि के मुख में डाला था उसी से कार्तिकेय की उत्पत्ति है । देवताओं के सेनापति बन कर, तारकासुर का संहार

कर चुकने पर, उन्होंने देवगिरि ही में रहना पसन्द किया। तब से वे वहीं रहते हैं। वहाँ पहुँच कर तू पुष्पमय हो जाना। फिर आकाशगङ्गा के जल से धोये हुए फूलों की धारा बरसा कर सुर-सेनानी षडानन को स्नान कराना। वहाँ तुझे उनका वाहन मोर भी मिलेगा। अपने पुत्र का वाहन होने के कारण, उस पर पार्व्वती का बड़ा प्रेम है। तारे से जड़े हुए चँदोवेवाले उसके पंख यदि गिर पड़ते हैं तो पार्वतीजी उन्हें तत्काल उठा कर बड़े स्नेह से, अपने कानों पर, कमल-दल के सदृश, खोंस लेती हैं। कुमार-स्वामी के मोर की आँखों के कोये यों तो स्वभाव ही से शुभ्र हैं। परन्तु पासही बैठे हुए शिवजी के भाल-चन्द्रमा की किरणों के योग से उनकी शुभ्रता और भी अधिक हो जाती है। पार्वतीनन्दन और स्वयं पार्व्वती के प्यारे उस मोर की भी कुछ सेवा करना। पर्वत की गुफाओं के भीतर तक चली जानेवाली घोर गर्जना करके देर तक उसे खूब नचाना।

शरजन्मा षडानन की आराधना करके तू आगे बढ़ना। देवगिरि छोड़ने पर मार्ग में शायद तुझे सस्त्रीक सिद्ध लोग मिलेंगे। वीणा उनके साथ होगी। वे कार्तिकेय को वीणा-वादन सुनाने के लिए प्रति दिन आया करते हैं। यदि कहीं तू उन्हें दिखाई दिया तो वे तेरी राह छोड़ कर हट जायँगे। वे कहेंगे कि यदि यह पानी बरसाने लगेगा तो हमारी वीणायें भीग जायँगी। फिर हम इसका क्या कर लेंगे। अतएव, आवो इसके रास्ते ही न जायँ।

कुछ दूर जाने पर तुझे चर्म्मण्वती (चम्बल) नदी मिलेगी। सुनते हैं, उसकी उत्पत्ति राजा रन्तिदेव के गो-मेध यज्ञों में आल-

स्मन की गई गायों में है। उनके रुधिर में ही वह उत्पन्न हुई है। वह पृथ्वी पर, नदी के रूप में, उस राजा की मूर्तिमती कीर्ति के समान है। उसके पास पहुँच कर उसका यथेष्ट सम्मान करना। उसका पाट है तो ख़ूब चौड़ा। पर आकाशचारी देवताओं को दूर से वह पतला जान पड़ता है। उन्हें उसकी पतली पतली धारा, पृथ्वी के कण्ठ में पड़ी हुई मोतियों की माला के सदृश, दिखाई देती है। विष्णु के वर्ण का चोर, श्याम-शरीरधारी तू जब उस नदी का जल पीने के लिए उस पर झुकेगा तब उन व्योमचारी देवताओं को तू ऐसा मालूम होगा जैसे मोतियों की उस माला के बीचो-बीच एक बड़ासा नीलम लगा हुआ है।

चर्म्मण्वती को उतर कर तू सीधे राजा रन्तिदेव की राजधानी दशपुर को जाना। वहां की वनितायें बड़ी चञ्चल हैं। भौंहें मरोड़ने और कुटिल-कटाक्ष-पात करने में उनकी प्रवीणता सर्वत्र प्रसिद्ध है। वे तुझे बड़े कौतूहल से देखेंगी। जिस समय वे सब पलकें उठा उठा कर काली काली पुतलीवाले अपने बड़े बड़े शुभ्र नेत्र तेरी तरफ़ कर देंगी उस समय ऐसी शोभा होगी मानो फेंके हुए कुन्द के सित सुमनों की ओर भौंरों की पाँति जा रही है। तू उनको दर्शन दिये बिना न रहना। वे तेरे दर्शनों की सर्वथा पात्र हैं।

आगे तुझे ब्रह्मावर्त मिलेगा। उस पर अपनी छाया डालता हुआ तू कुरुक्षेत्र को जाना। यह वही कुरुक्षेत्र है जहां महाभारत-युद्ध में लाखों क्षत्रियों का नाश हुआ था और जहां अर्जुन ने अपने गाण्डीव नामक धनुष से राजाओं के मुखों पर इसी तरह असंख्

पैने बाणों की वर्षा की थी जिस तरह कि तू कमलों पर वारि-धारा की वर्षा करता है। इसी कुरुक्षेत्र के पास ही सरस्वती नदी बहती है। तुझसे श्रीकृष्ण के बड़े भाई हलधर का परिचय कराने की ज़रूरत नहीं। तू उन्हें अच्छी तरह जानता ही होगा। कौरवों और पाण्डवों, दोनों, को अपना भाई जान कर वे महाभारत के नरनाशी युद्ध में नहीं शरीक हुए। उन्होंने कहा—हमारे लिए जैसे पाण्डव हैं वैसे ही कौरव भी हैं। हम क्यों एक का पक्ष लेकर दूसरे को मारने की चेष्टा करें। इसी से समर-विमुख होकर वे पूर्वोक्त सरस्वती नदी के तट पर चले गये। वहाँ वे कुछ काल तक रहे। वहाँ उन्होंने एक काम किया। उन्हें मदिरा से बड़ा प्रेम था। उसे वे पहले अपनी प्रियतमा पत्नी रेवती को पिला लेते थे तब स्वयं पीते थे। पीते समय मदिरा भरे हुए प्याले में रेवतीजी के लोल लोचनों की छाया पड़ती थी। पत्नी के नेत्रों का प्रतिबिम्ब पड़ने के कारण बलदेवजी की प्रीति उस मदिरा पर और भी अधिक हो जाती थी। परन्तु सरस्वती के तट पर उन्होंने अपनी उस प्यारी मदिरा का एक-दम ही परित्याग कर दिया। उसके बदले वे सरस्वती के पावन पय का ही सेवन करते रहे। उसके सामने उन्होंने सुरा को असार समझा। इस घटना से सरस्वती के सलिल की महिमा का तू अच्छी तरह अनुमान कर सकेगा। अतएव, भाई मेघ! तू पुण्यसलिला सरस्वती का अवश्य ही अवगाहन करना। उसके जल के आचमन से तेरा अन्तःकरण सर्वथा शुद्ध हो जायगा; तेरा शरीर-मात्र ही काला रह जायगा। सो शरीर की कालिमा कालिमा नहीं; हृदय में कालिमा न होना चाहिए

कुरुक्षेत्र से कनखल के लिए प्रस्थान करना। वहाँ शैलराज हिमालय से जह्नुतनया गङ्गा उतरी है। राजा सगर की सन्तति के लिए, स्वर्ग पर चढ़ने में, उसने सीढ़ी का काम दिया है। उसी की कृपा से सगर के साठ हज़ार सुत स्वर्ग पहुँचे हैं। इस गङ्गा को शिवजी ने अपने जटा-जूटों में ठहरा रक्खा है। यह बात पार्वतीजी को पसन्द नहीं। वे गङ्गाजी को अपनी सौत समझती हैं। इसी से उन्होंने एक बार भौंहें टेढ़ी करके गङ्गाजी पर कुटिल कटाक्ष किया था। इस पर गङ्गाजी ने उनकी ख़ूब ख़बर ली थी। उन्होंने बहुत सा फेन बहा कर उसके बहाने पार्वतीजी की हँसी सी की थी। यही नहीं, उन्होंने अपने तरङ्गरूपी हाथों से शिवजी के भाल-चन्द्रमा को पकड़ कर उनकी जटाओं को झकझोर भी डाला था। इस घटना द्वारा उन्होंने मानों शिवजी से यह कहा था कि इसे मना नहीं करते! देखिए, यह मेरे साथ कैसी कुटिलता कर रही है!

आकाश में अपने शरीर के अगले भाग को ख़ूब लम्बा करके जब तू गङ्गाजी का जल पीने के लिए सुर-गज के समान झुकेगा तब सुरसरि के स्फटिक-तुल्य स्वच्छ और शुभ्र जल पर तेरी काली काली छाया पड़ेगी। उस समय बड़ा ही अनुपम दृश्य दिखाई देगा। मालूम होगा कि प्रयाग छोड़ कर कनखल ही में गङ्गा-यमुना का सङ्गम हो गया!

वहाँ से तुझे गङ्गाजी के पिता हिमालय पर जाना पड़ेगा। उस पर कस्तूरी-मृग बहुत हैं। उनकी नाभियों से कस्तूरी गिरा करती है। इस कारण जिन शिलाओं पर वे बैठते हैं वे भी

कस्तूरी की सुगन्धि से सुरभित हो जाती है। हिमालय पर बर्फ़ बहुत गिरती है; इससे उसके शिखर शुभ्र दिखाई देते हैं। उस पर्वत पर पहुँच कर थकावट मिटाने के लिए जब तू बर्फ़ से ढके हुए किसी शिखर के ऊपर बैठ जायगा तब ऐसा मालूम होगा जैसे शिवजी के शुभ्र बैल के सिर पर, सींगों से गीली भूमि खोदने के कारण, कीचड़ लग रही है।

हिमालय पर उपकार करने का मौक़ा भी शायद तुझे मिल जायगा। जब हवा ज़ोर से चलती है तब उस पर्वत के ऊपर देव-दारु के वृक्ष आपस में रगड़ खाने लगते हैं। इस रगड़ से कभी कभी आग उत्पन्न हो जाती है। उसकी चिनगारियों से जङ्गल ही नहीं जल जाता, चमरी गायों की पूछों के बाल भी जल जाते हैं। यदि तेरे सामने भी कहीं ऐसी आग लगी हो तो अपनी वारि-धाराओं से हिमालय की दाह-व्यथा तुरन्त ही शान्त कर देना। चूकना मत। क्योंकि, आपत्ति में पड़े हुए पुरुषों की पीड़ा हर लेना ही सत्पुरुषों की सम्पत्ति का सच्चा फल है। सम्पत्तिमान् होकर भी मनुष्य यदि विपत्ति-ग्रस्तों के काम न आया तो उसकी सम्पत्ति ही फिर किस काम की?

हिमालय पर शरभ नाम के बड़े बली पशु रहते हैं। उन्हें अपने बल का बड़ा घमण्ड है। इस कारण जब तू घोर रव करेगा—जब तू ज़ोर से गरजेगा—तब उनके कोप का ठिकाना न रहेगा। तेरी ध्वनि उन्हें असह्य हो जायगी। वे कहेंगे—हमारे सामने गरजने-वाला, हमसे भी अधिक बली, यह कहाँ से आया। अतएव, घमण्ड में आकर वे कूद-फाँद मचाने लगेंगे और तुझे लाँघ कर निकल

जाने की चेष्टा करेंगे। उनकी यह चेष्टा सफल तो होने ही की नहीं, क्योंकि तू लाँघा जा ही नहीं सकता। हाँ, इस चेष्टा में वे अपने हाथ-पैर अवश्य तोड़ लेंगे। जिस समय तुझे शरभों का यह तमाशा दिखाई दे उस समय उन पर ओलों की खूब ही घनघोर वर्षा करके उन्हें उपहास का पात्र बनाये बिना न रहना। आरम्भ ही में निष्फल यत्न करनेवालों में से भला कोई भी ऐसा होगा जिसकी हँसी न हुई हो?

हिमालय पर अर्द्धेन्दुशेखर शङ्कर की चरणशिला—शिला के ऊपर उनके पैर का चिह्न—है। सिद्ध और साधु लोग उसकी नित्य पूजा करते हैं। उसके दर्शन से श्रद्धालु जनों के सारे पाप छूट जाते हैं और शरीरान्त होने पर इन्हें सदा सर्वदा के लिए शिवजी के गणों की पदवी मिल जाती है। अत्यन्त नम्र होकर, भक्ति-भाव-पूर्वक, उस चरण-शिला की तू भी प्रदक्षिणा करना। इससे तुझे भी उसी फल की प्राप्ति होगी जो सिद्धादिकों को होती है। वहाँ पर तुझे एक और भी काम करना होगा। वहाँ बाँस के वृक्ष बहुत हैं। उनके छेदों में जब वायु भरती है तब उनसे मुरली-रव के सदृश मधुरध्वनि निकलती है। इधर तो यह होता है उधर किन्नरियाँ बड़े ही अनुराग से त्रिपुर-विजय-सम्बन्धी यशोगान करके शिवजी को रिझाती हैं। ऐसे मौके पर यदि तू हिमालय की गुफाओं में अपनी घोर गर्जना भर देगा तो मृदङ्ग सा बजने लगेगा। इस प्रकार शिवजी के सङ्गीत का सारा ठाठ बन जायगा। मुरली, मृदङ्ग और गान, तीनों का समाँ बँध जायगा।

धीरे धीरे हिमालय के सभी शिखरों को पार करने पर उसके

दूसरी तरफ़ तुझे क्रौञ्चरन्ध्र नामक घाटी मिलेगी । यह घाटी हंसों के लिए दरवाज़े का काम देती है । इसी से होकर हंस आते जाते हैं । यह बड़ी प्रसिद्ध घाटी है । परशुरामजी के प्रबल-पराक्रम-सम्बन्धी यश की यह सूचक है । शिवजी से अस्त्र-विद्या सीख कर जब परशुरामजी कैलास से नीचे उतरे तब अपने बाणों से हिमालय को काट कर उन्होंने यह घाटी बना दी और इसी की राह से हिमालय पार करके वे सुखपूर्वक निकल आये । तू भी अपने शरीर को लम्बा और तिरछा करके इस घाटी से निकल जाना । निकलते समय, बलि को छलनेवाले विष्णु के बढ़े हुए श्यामचरण के सदृश तेरी शोभा होगी । उस समय ऐसा मालूम होगा जैसे बामनजी का बढ़ा हुआ श्यामल पाँव घाटी से निकल रहा है ।

क्रौञ्चरन्ध्र से निकल कर उत्तर दिशा में ऊपर की ओर जाना । आगे ही तुझे कैलास-पर्व्वत मिलेगा । वह शुभ्र स्फटिक का है । इस कारण सुर-सुन्दरियाँ उससे दर्पण का काम लेती हैं; उसमें उनके प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं । यह वही कैलास है जिसे लङ्केश रावण ने अपनी बीसों भुजाओं का बल लगा कर जड़ से हिला दिया था । कुमुद के सदृश उसके सफ़ेद शिखर आसमान के भीतर दूर तक चले गये हैं । उन्हें देख कर ऐसा मालूम होता है जैसे त्रिपुरान्तक त्रिलोचन का अट्टहास इकट्ठा होकर सभी दिशाओं में चमक रहा है । वह पर्वत तो तत्काल काटे गये हाथी-दाँत के समान उजला है और तू चिकने काजल के समान काला । अतएव, जब तू उसके किनारे किसी शिखर पर बैठ जायगा तब अपूर्व ही शोभा होगी । तब तू गोरे गोरे बलरामजी के कन्धे पर पड़े हुए नीलाम्बर की उपमा को पहुँच जायगा

पार्वती को साथ लेकर शिवजी जब कैलास के क्रीड़ा-शैल पर टहलने निकलते हैं तब अपने एक हाथ से साँप का कड़ा उतार डालते हैं। उसी बिना कड़े के हाथ को अपने हाथ में थाम कर पार्वतीजी उनके साथ घूमा करती हैं। यदि कहीं तुझे वे इसी तरह टहलती हुई मिल जायँ तो तू एक काम करना। अपने अन्तर्गत जल का स्तम्भन करके अपने शरीर को ज़रा कड़ा कर लेना। फिर सीढ़ी के रूप में हो जाना। इससे तेरे ऊपर पैर रखती हुई पार्वतीजी सुख से ऊँची जगहों पर चढ़ती चली जायँगी। उन्हें न चढ़ने में ही कुछ कष्ट होगा और न पैर रखने ही में। पहाड़ों पर चलने से पत्थरों के टुकड़े पैरों में चुभते हैं। पर तू चिकना है, इस कारण तेरे शरीर पर वे खटाखट पैर रखती चली जायँगी; पत्थरों के चुभ जाने का डर न रहेगा।

हाँ, एक बात से मैं तुझे सचेत कर देना चाहता हूँ। कैलास पर देवाङ्गनायें तुझे पकड़ कर अवश्य अपने घर ले जायँगी। वहाँ वे तुझे पिचकारी या जल छिड़कने की कल बनावेंगी, अथवा तुझसे वे फौवारे का काम लेंगी। यदि तू उनकी इच्छा के अनुसार जल का छिड़काव न करेगा तो वे अपने कङ्कणों में जड़े हुए हीरों से तेरे शरीर को घिस घिस कर ज़बरदस्ती उससे जल निकालेंगी। उनके इस खेल से यदि तू थक कर पसीने पसीने हो जाय और फिर भी तेरा छुटकारा न हो तो तू कर्ण-कठोर गर्जन करके उन्हें डरा देना। तेरा कुलिश-कर्कश नाद सुन कर वे अवश्य ही तुझे छोड़ देंगी।

सुर-सुन्दरियों से छुटकारा पाकर मानस-सरोवर के उस

सलिल को, जो सोने के सुन्दर सरोरुह उत्पन्न करता है, पेट भर पीना। फिर अपनी वारि-बूँदरूपी वसन को ऐरावत के मुख पर डाल कर—वारिबूँदों को उपहार-सदृश देकर—उसे प्रसन्न करना। तदनन्तर अपने जल-कणों से आर्द्र हुई वायु बहा कर कल्पवृक्षों के पत्ररूपी परों को ख़ूब हिलाना। यह सब करके स्फटिक के समान शुभ्र और सुन्दर उस पर्व्वत पर अपनी काली काली छाया डालता हुआ जहाँ जी चाहे वहाँ घूमना। वह पर्वत मेरा परम मित्र है। अतएव वहाँ तेरी रोक-टोक करनेवाला कोई नहीं। वह तुझे अपने ऊपर यथेच्छ घूमने फिरने देगा।

मित्र मेघ! उसी कैलास-पर्वत के अङ्क में, गङ्गाजी के ठीक तट पर, मेरी निवास-भूमि अलका नाम की नगरी है। उसे तू देखते ही पहचान लेगा। कैलास की प्रान्तभूमि में जाह्नवी के किनारे बसी हुई वह नगरी उस कामिनी के सदृश मालूम होती है, जो अपने कान्त की गोद में बैठी है और जिसकी सफ़ेद साड़ी का छोर वायु से उड़ रहा है। शुभ्र जल के बड़े बड़े बूँद बरसानेवाले कृष्ण-वर्ण-धारी तुझे वह अपने ऊँचे ऊँचे महलों के ऊपर इस तरह धारण कर लेगी जिस तरह कि बड़े बड़े मोती गुँथे हुए केश-कलाप को कामिनी अपने सिर पर धारण करती है। तुझे आया देख वह कृतार्थ हो जायगी और सिर आँखों पर तुझे स्थान देगी।
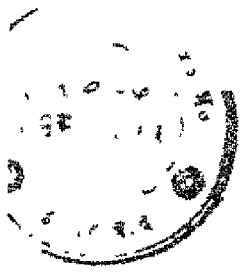
उत्तरार्द्ध

अलका अनेक बातों में तेरी समता करेगी। तुझमें कुछ ऐसी विशेषतायें हैं जो अलका के महलों में भी हैं। देख, मैं बताता हूँ। तुझमें बिजली है; अलका के महलों में भी विद्युल्लता सी ललित ललनायें हैं। तेरे साथ इन्द्रधनुष है; उसके महलों में भी नाना रङ्गों से रञ्जित विचित्र चित्रावली है। तू मीठा-मीठा गम्भीर घोष किया करता है; उसके महलों में भी सङ्गीत-सम्बन्धी मृदङ्ग बजा करते हैं। तेरे भीतर जल है; उसके महलों के फ़र्शों और आँगनों में भी मणियाँ जड़ी हुई हैं। तू ऊँचा है; उसके महल भी अभ्रंकश—बादलों को छूनेवाले—हैं। इसी से मैं कहता हूँ कि अनेक बातों में वह तेरी बराबरी करेगी।

अलका में एक और भी बहुत बड़ी विशेषता है। वहाँ हर ऋतु के फूल हर समय प्राप्त होते हैं। वहाँ की स्त्रियाँ हाथ में लीला-कमल लिये रहती हैं; अलकों में कुन्द की कलियाँ खोंसे रहती हैं; आननों में लोध के फूलों के पीले पीले पराग का लेप लगाये रहती हैं; चोटियों में नवीन कुरबक गूँथे रहती हैं; कानों में सिरस के फूल रक्खे रहती हैं; और, माँगों में, तेरी बदौलत प्राप्त होनेवाले, वर्षा-ऋतु में उत्पन्न, कदम्ब-कुसुम धारण किये रहती हैं। क्यों, हो गये न सभी ऋतुओं के फूल?

वहाँ के महल शुभ्र मणियों के हैं। कोई महल ऐसा नहीं जिसमें मणियाँ पच्ची न की गई हों। इस कारण रात को नक्षत्रों और तारों की छाया जब उन पर पड़ती है तब ऐसा मालूम होता है मानों उन पर फूल खिले हैं। उन महलों में सदा ही नाच-राग-रङ्ग हुआ करता है। जिस समय मन्द मन्द मृदङ्ग बजते हैं, मालूम होता है कि बादल गरज रहा है। सस्त्रीक यक्ष उन्हीं महलों में रहते हैं और कल्पवृक्ष के कुसुमों से तैयार की गई मदिरा पी पी कर आनन्दपूर्वक विहार किया करते हैं।

अलका की अभिसारिका स्त्रियाँ अपने अपने प्रेमियों से मिलने के लिए कभी कभी रात को बाहर निकलती हैं। जल्दी जल्दी चलने के कारण राह में कहीं उनकी अलकों से मन्दार के फूल गिर जाते हैं, कहीं कर्णफूलवत् पहने हुए कनक कमल कानों से खिसक पड़ते हैं, और कहीं हृदयस्थल की ऊँचाई के कारण, डोरा टूट जाने से, हार के मोती बिखर जाते हैं। प्रातःकाल इन चीज़ों को पड़ी देख लोग तत्काल ताड़ जाते हैं कि इसी राह से अभिसारिकायें गई हैं।

यक्षों के दीपक मणियों और रत्नोंही के हैं। वे कभी बुझते ही नहीं। उन्हें कभी जलाने की ज़रूरत भी नहीं होती। अपने स्थान से वस्त्र खिसक जाने पर, यक्षों की अल्पवयस्का अङ्गनायें, लज्जित होकर, कुमकुम आदि मुट्ठी में लेकर उसे, सामने रक्खे हुए बड़ी लौ वाले उन रत्न-प्रदीपों पर, फेंकती हैं कि वे बुझ जायँ; परन्तु उनका यह प्रयत्न व्यर्थ जाता है। भला रत्नों के भी दीप कहीं बुझ सकते हैं? आख़िर को वे मुग्धाही तो ठहरीं। मुग्ध जनों को का ज्ञान कहाँ?

वहाँ वायु के उड़ाये हुए तेरे सदृश, और भी बादल आया करते
हैं। वे अलका के महलों के ऊपर पहुँच कर शरारत करने लगते
हैं। मौक़े बे-मौक़े बरस कर पहले तो वे महलों के आँगनों में पूरे
गये चौकों और खींची गई चित्रावलियों को बिगाड़ देते हैं, फिर
कृतापराध से डर कर खिड़कियों के रास्ते भाग खड़े होते हैं। उस
समय सिमिट कर वे धुवें के समान पतले हो जाते हैं। इस काम
में वे बड़ी ही पटुता दिखाते हैं; व्यभिचारी मनुष्य के सदृश,
धुवें का रूप धर कर, खिड़की की राह भागना वे खूब जानते हैं।

अलका की किस किस विशेषता का मैं वर्णन करूँ। वहाँ घर
घर में चन्द्रकान्त-मणियाँ हैं। वे बहुधा शय्याओं के ऊपर, रेशम
की डोरियों से बँधी हुई, मसहरी की छत से लटका करती हैं।
आकाश मेघमुक्त होने पर जब चन्द्रमा की चारु किरणें उन पर
पड़ती हैं तब उनसे जल के कण टपकने लगते हैं। उनकी शीतलता
से सुन्दरियों की सुरत-ग्लानि दूर होने में देर नहीं लगती। देखना,
आकाश में फैल कर कलाधर की किरणों के आने के मार्ग में कहीं
रुकावट न पैदा करना।

मनोज इस बात को अच्छी तरह जानता है कि कुवेर के सखा
साक्षात् पिनाकपाणि शङ्कर वहीं रहते हैं। अतएव, उनके डर से वह
भौंरों की प्रत्यञ्चावाले अपने चाप को चढ़ाने का बहुत ही कम
साहस करता है। शायद ही कभी वह उसे उठाता होगा। परन्तु
चाप न चढ़ाने पर भी उसका काम हो ही जाता है; वह नहीं
रुकता। उसके धनुष का काम वहाँ की स्त्रियों के भ्रूभङ्गयुक्त नेत्रों
से चलाये गये कुटिल-कटाक्षरूपी शरों से हो जाता है। वनिताओं

के इन विभ्रम-विशिखों को तू ऐसा वैसा न समझना। जिस पर लक्ष्य करके ये चलाये जाते हैं उसे ये घायल किये बिना नहीं रहते; ये अपने निशाने पर लग कर ही रहते हैं; कभी निष्फल नहीं जाते। इनकी मार से कोई भी अपना बचाव नहीं कर सकता।

अलका पहुँच कर तू मेरे घर जाना। वह, कुबेर के महलों से उत्तर की ओर, कुछ ही दूर आगे, है। मैं तुझे अपने घर की पहचान बताता हूँ। उसके द्वार पर अनेक रङ्गों से रँगा हुआ, इन्द्रधनुष के समान शोभाशाली, तोरण तुझे दूर से दिखाई देगा। घर के उद्यान में मन्दार का एक बाल वृक्ष है। उसे मेरी प्रियतमा पत्नी ने पुत्रवत् पाला है। फूलों के गुच्छों से लद कर उसकी डालियाँ इतनी झुक जाती हैं कि सहजही उन तक हाथ पहुँच सकता है। उसके फूल तोड़ने में कुछ भी कष्ट नहीं होता।

उसी उद्यान—उसी पुष्प-वाटिका—में एक जलाशय है। उसकी सीढ़ियों पर पन्ने जड़े हुए हैं—वे सीढ़ियाँ मरकत-शिलाओं की हैं। जलाशय के जल पर नीलम के समान सुन्दर नालोंवाले कनक-कमल छाये रहते हैं। उसका जल इतना निर्मल और इतना मीठा है कि वहाँ रहनेवाले हंसों को तुझे देख कर भी—वर्षा-ऋतु आजाने पर भी—मानसरोवर की याद नहीं आती। वह सरोवर यद्यपि अलका के पासही है, दूर नहीं, तथापि मेरे उद्यान में हंसों को इतना सुख है कि वे मान-सरोवर को भूल सा गये हैं।

पूर्वोक्त जलाशय के तीर पर मेरा क्रीड़ाशैल—मन बहलाने का कृत्रिम पर्वत—है। उसके शिखर पर सुन्दर सुन्दर नीलम लगे हुए हैं। कनक-कदली की दर्शनीय बाड़ से वह शैल चारों तरफ घिरा हुआ है।

श में प्रान्तभाग में चमकती हुई बिजली से युक्त तुझे देखता हूँ तब
रा वह शैल मेरे नेत्रों के सामने आ आ जाता है। बात यह है कि
तुझमें मैं उसकी समता पाता हूँ। तुझे देखते ही मुझको उसका नीलम
जड़ा हुआ शिखर याद आ जाता है और तेरे प्रान्तभाग में बिजली
चमकती देख उसकी वह कनक-कदली की बाड़ याद आ जाती है।
मेरी गृहिणी उस शैल का बड़ा प्यार करती है। इस कारण उसका
स्मरण होते ही मेरा कलेजा काँप उठता है और मैं विह्वल हो
जाता हूँ।

उस क्रीड़ा-शैल पर चमेली का एक मण्डप है, जिसके चारों
ओर कुरबक (कुरे) की बाड़ है। उसी मण्डप के पास दो वृक्ष हैं-
एक तो लाल अशोक का, जिसके हिलते हुए पत्ते बहुत ही सुहावने
मालूम होते हैं; दूसरा बकुल (मौलसिरी) का, जिसकी मनोहरता
मैं वर्णन नहीं कर सकता। उनमें से पहला तो तेरी सखी
(मेरी पत्नी) के बाँयें पैर का स्पर्श चाहता है; क्योंकि बिना उसके
वह फूलता ही नहीं; और दूसरा दोहद के बहाने उसकी मुख-मदिरा
की प्राप्ति की आकाङ्क्षा रखता है, क्योंकि वह भी बिना उसके
फूल नहीं देता। मित्र! देख, मेरे क्रीड़ा-शैल के इन वृक्षों की वृत्ति
भी मेरी ही सी है। जैसे मैं अपनी गृहिणी के पैर छूने और
मदिरापान के बहाने उसके मुख का रस लेने की इच्छा रखता हूँ
वैसे ही ये भी रखते हैं।

उन्हीं दोनों वृक्षों के बीच में सोने का एक ऊँचा खम्भा है।
उसकी जड़ में हरे बाँस की कमनीय कान्तिवाले सुन्दर सुन्दर रत्न
जड़े हैं। खम्भे के ऊपर स्फटिक की एक पटिया है। उसी पर तेरा

मित्र मोर आकर जब सायङ्काल बैठता है तब मेरी हृदयेश्वरी कङ्कण बजते हुए अपने कोमल कर से ताल दे देकर उसे नचाती है।

मेरे बताये हुए इन चिह्नों को तू अच्छी तरह याद रखना। इन्हें देख कर तू मेरा घर सहज ही पहचान लेगा; किसी से पूछने की ज़रूरत न पड़ेगी। हाँ, एक चिह्न और भी मैं बताता हूँ। मेरे द्वार पर शङ्ख और पद्म के चित्र हैं। उनसे भी तुझे मेरा घर पहचानने में सहायता मिलेगी। हाय हाय! बिना मेरे मेरा घर, इस समय, बिलकुल ही शोभाहीन होगा। सूर्य्य के वियोग से जो दशा वारिज-वन की होती है, मेरे वियोग से वही दशा मेरे घर की भी हुई होगी। कमल ही के सदृश वह भी मलिन और छविहीन होगया होगा।

मेरे घर पर पहुँच कर मेरी प्रियतमा के प्राणों का परित्राण करने के लिए तू एक काम करना। बड़ा भारी रूप धर कर तू उसके सामने न जाना, क्योंकि वैसा रूप देखने से शायद वह डर जाय; अतएव, तू हाथी के बच्चे के सदृश छोटा सा रूप धारण कर लेना और मेरे क्रीड़ा-शैल के ऊपर उसी शिखर पर चुपचाप जा बैठना जिसका उल्लेख मैं पहले ही कर चुका हूँ। फिर, अपनी बिजलीरूपिणी दृष्टि को मेरे घर के भीतर जाने देना। परन्तु उसे बहुत न चमकाना। जुगनू की पाँति के सदृश उसे थोड़ा थोड़ा चमका कर देखना कि मेरी प्राणवल्लभा क्या कर रही है। मैं उसकी भी पहचान बताये देता हूँ। वह कृशाङ्गी है; उम्र उसकी सोलह वर्ष से अधिक नहीं; दाँत उसके अनार केसे दाने हैं; ओंठ उसके पके हुए बिम्ब-फल के सदृश हैं; कटि उसकी अत्यन्त क्षीण

है; नाभि उसकी गहरी है; आँखें उसकी चकित हरिणी की आँखों के सदृश हैं; नितम्ब उसके बहुत भारी हैं, इससे वह चलने में अलसाती सी है; और पयोधर उसके गुरुता-युक्त हैं, इससे वह कुछ झुकी हुई सी है। उसके रूपवर्णन में और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। इतना ही कहना बस होगा कि स्त्रियों की सृष्टि में ब्रह्मा ने उसी को सबसे अधिक सुन्दर बनाया है; अथवा ब्रह्मा की कारीगरी का सबसे बढ़िया नमूना वही है।

उसी को तू मेरी प्राणेश्वरी समझना। वह मेरे दूसरे जीवन के समान है। मुझसे वियुक्त होने के कारण वह बहुत कम बोलती होगी। बोले क्या, बातचीत में उसका मन ही न लगता होगा। उसकी दशा तो चकवे से बिछुड़ी हुई चकवी के सदृश होगी। वियोग के इन दिनों में उसकी उत्कण्ठा बहुत ही बढ़ गई होगी। शीत की मारी पद्मिनी के समान उसका रूप कुछ का कुछ होगया होगा। बेचारी अकेली न मालूम अपने दिन किस तरह काटती होगी। दिन-रात रोते रोते उसकी आँखें सूज गई होंगी। गरम गरम उसासें लेते लेते, उसके ओठों का रङ्ग फीका पड़ गया होगा। खुली हुई अलकें उसके मुख पर लटक रही होंगी; उनसे वह कहीं कहीं छिप गया होगा। अतएव हाथ पर रक्खा हुआ, उसका वह मुख—तुझसे पीछा किये गये (घनों से घिरे हुए) चन्द्रमा के समान—मलिन और कान्तिहीन दिखाई देता होगा। चलायमान मेघों के कारण जो हाल चन्द्रमा का होता है—अर्थात् कभी तो उसका कुछ अंश ढक जाता है, कभी खुल जाता है, कभी धुँधला दिखाई देता है—वही हाल- लटकी हुई अलकों के कारण मेरी

प्रिया के मुख का भी होगया होगा। वह बहुत ही दीन दिखाई देता होगा।

जिस समय तू मेरे घर पहुँचेगा उस समय या तो मेरी अर्द्धाङ्गिनी मेरी कुशल-कामना से देवाराधना कर रही होगी, या वियोग-दुःख से दुबले हुए मेरे शरीर का अनुमान करके उसी भाव का व्यञ्जक मेरा चित्र खींच रही होगी, या पींजड़े में बैठी हुई मधुर-भाषिणी मैना से पूछ रही होगी—"अरी, क्या तुझे भी मेरे प्रियतम की कभी याद आती है? तेरा तो वे बड़ा प्यार करते थे"। या वह मैले कपड़े पहने हुए, गोद पर वीणा रख कर, मेरे कुल के गीत गाने बैठी होगी और आँसुओं की झड़ी से भीगे हुए तारों को पोछती हुई पूर्वाभ्यस्त मूर्छना को भी बार बार भूलती होगी। या देहली पर चढ़ाये गये फूल भूमि पर रख रखकर वह मेरे शाप की अवधि के अवशिष्ट महीने गिनती होगी। या मन ही मन यह अनुमान करके कि मेरे शाप के दिन बीत गये और मैं घर आगया, वह मेरे समागम का सुख लूट रही होगी। मैं ये सम्भावनायें इसलिए करता हूँ कि पति के वियोग में स्त्रियाँ प्रायः यही बातें कर करके अपना मन समझाती हैं और किसी तरह अपने दिन काटती हैं।

दिन भर तो काम-काज में लगी रहने से उसे मेरे वियोग की पीड़ा कम सताती होगी; परन्तु, रात को कोई काम न रहने से, मुझे डर है, वह वियोग-व्यथा से अत्यन्त ही व्याकुल होती होगी। मेरा कुशल-समाचार सुना कर उसे सुखी करने के लिए तू रात ही के समय मेरे घर पहुँचना और चुपचाप खिड़की में बैठ जाना। तू देखेगा कि वह साध्वी भूमि पर एकहा करवट पड़ी है मनोव्यथा

में वह अतिशय क्षीण हो रही है; मेरा वियोग उसे इतना सता रहा है कि हज़ार चेष्टा करने पर भी उसे नींद नहीं आती। वह तुझे अँधेरे पाख की चतुर्दशी के चन्द्रमा की बची हुई एक-मात्र कला के समान दुबली मालूम होगी। मेरे साथ रहते समय जो रात पलक मारते बीत जाती थी उसी को अब वह वियोग-जन्य उष्ण आँसू बहाती हुई बड़ी कठिनता से काटती होगी। बार बार गरम उसासें लेते लेते उसके नवल-पल्लव-तुल्य कोमल अधर सूख गये होंगे। बिना तेल-उबटन लगाये ही स्नान करने के कारण उसके केशों की बुरी दशा होगी। वे रूखे हो गये होंगे। उनकी लटें उसके कपोलों पर लटक रही होंगी। जब वह लम्बी उसासें लेती होगी तब मुख पर पड़ी हुई उसकी अलकें हिल हिल कर इधर-उधर बिखर जाती होंगी। वह बहुत चाहती होगी कि यदि क्षण भर भी नींद आ जाय तो साक्षात् न सही, स्वप्न ही में, मुझसे उसका मिलाप हो जाय; परन्तु आँखों से बहनेवाले आँसुओं की धारा पल भर भी उसकी पलकें न लगने देती होगी।

मैं उसकी दयनीय दशा का कहाँ तक वर्णन करूँ। जिस दिन मैं उससे बिछुड़ा उस दिन उसकी वेणी बिना माला ही के बाँधी गई थी। शाप की अवधि बीत जाने पर जब मैं मुदित-मन घर लौटूँगा तब उसे मैं ही अपने हाथ से खोलूँगा। तब तक वह वैसी ही पड़ी रहेगी। इस कारण वह अत्यन्त कठिन हो गई होगी—इतनी कठिन कि उसके स्पर्श से मेरी प्रिया के कपोलों को बहुत कष्ट होता होगा। उसे वह बढ़े हुए नखोंवाले अपने हाथ से बार बार सरकाती होगी।

संयोग के समय चन्द्रमा की पीयूष-सदृश शीतल किरणों से मेरी प्राणेश्वरी ने बहुत सुख पाया है। इस कारण जब वे खिड़की की राह से घर में प्रवेश करती होंगी तब पहली प्रीति की प्रेरणा से उसकी आँखें उस तरफ़ दौड़ जाती होंगी। परन्तु वियोग-व्यथा की याद आते ही वे तत्काल ही वहाँ से लौट पड़ती होंगी; क्योंकि अब तो वे विषवत् दुःखदायिनी हो रही होंगी। उस समय-आँसुओं से पूर्ण पलकों से कभी तो वह आँखें ढक लेती होगी और कभी फिर खोल देती होगी। अतएव वह कुछ कुछ सोती और कुछ कुछ जागती सी ऐसी मालूम होती होगी जैसी कि दिन में, आकाश मेघाच्छादित होने पर, थल की कमलिनी मालूम होती है—वह कमलिनी जिसे देखने से यही नहीं ज्ञात होता कि वह सो रही है कि जाग रही है।

मित्र मेघ! अपनी गृहिणी की दीन दशा का अनुमान करके मेरा कलेजा फटता है। उसके कमल-कोमल शरीर पर एक भी गहना न होगा; सब उसने उतार फेंके होंगे। भू-शय्या पर वह बिलखती हुई पड़ी होगी और अपने अत्यन्त कृश शरीर को बड़ी ही कठिनता से धारण कर रही होगी। उसके दुःख की सीमा न होगी। मैं सच कहता हूँ, उसकी दैन्यावस्था देख कर तू भी अवश्यही रो देगा—जल कणों के रूप में आँसू गिराये बिना तू भी कदापि न रह सकेगा। क्योंकि, जिनकी आत्मा आर्द्र है—जो सरस-हृदय हैं—वे बहुधा करुणामय होते हैं; उनसे दूसरे का दुःख नहीं देखा जाता। मैं जानता हूँ कि मेरी पत्नी का मुझ पर प्रगाढ़ प्रेम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस पहलौठे वियोग में उसकी वही

दशा हुई होगी जिसका कि मैंने तुझसे वर्णन किया। तू मुझे व्यर्थ बातूनी न मान बैठना। अपने मन में कहीं तू यह न समझना कि मैं, अपना झूठा सौभाग्य प्रकट करने के लिए, व्यर्थ ही अपनी बड़ाई बघार रहा हूँ। भाई मेरे! इस विषय में जो कुछ मैंने तुझसे कहा वह सब तू बहुत शीघ्र स्वयं ही अपनी आँखों से देख लेगा तब तुझे मालूम हो जायगा कि मैंने कोई बात बढ़ा कर नहीं कही—मैंने ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं की।

उसकी कज्जलहीन आँखें अब अच्छी न लगती होंगी। उन पर रूखी अलकों के बार बार गिरने से उनकी टेढ़ी चितवन जाती रही होगी—उनका तिरछा देखना छूट गया होगा। मद्यपान छोड़ देने से उन आँखों की भौंहें भी विलास-लीला दिखाना भूल गई होंगी—उनका भङ्ग-भाव, उनका चमत्कार, जाता रहा होगा। मैं अनुमान करता हूँ कि जब तू मेरी प्रिया के पास पहुँचेगा तब शकुन-सूचना के लिए उस मृगनयनी की बाईं आँख अवश्य फड़क उठेगी। उस समय उसकी उस आँख की शोभा, मछली के द्वारा हिलाई गई कमलिनी की शोभा की समता को पहुँच जायगी।

तेरे पहुँचने पर मेरी प्रियतमा को एक और भी शकुन होगा। कनक-कदली के समान उसकी गोरी गोरी और गोल बाईं जाँघ भी फड़क उठेगी—वह जाँघ जिस पर से मेरे नखों के चिह्न मिट गये हैं, जिस पर तागड़ी की लड़ का लटकना बन्द हो गया है और जिसे मेरे कर-स्पर्श का सुख भी अप्राप्य हो गया है।

उस समय यदि उसकी आँख लग गई हो और वह निद्रा का यत्किञ्चित् सुख भोग रही हो तो बहुत नहीं, पहर भर, ज़रूर

ठहर जाना । पहुँचते ही गड़गड़ा कर गरजने न लगना । सम्भव है, वह सुख प्रणयी को स्वप्न में देख रही हो । इस दशा में यदि तू गरज कर उसे जगा देगा तो उसका वह स्वप्न-सम्भूत सारा सुख मिट्टी में मिल जायगा । देखना, ऐसा न हो : मेरी तो यह प्रार्थना है कि तू प्रातःकाल तक मेरे घर पर ठहरा रहना । बड़े भोर, अपने जल-कणों से भीगी हुई, अतएव शीतल, पवन चला कर जब तू चमेली की कलियों को विकसित करना तभी लगे हाथ उसे भी जगा कर सचेत कर देना । उस समय तुझे खिड़की में बिजली चमकाते बैठा देख वह तेरी ओर निश्चल नेत्रों से देखेगी । तब तू धीरे धीरे गरज कर उस मानिनी से मेरा सन्देश कहना । सन्देश सुनाने के लिए वही मौका सबसे अच्छा होगा । तू इस प्रकार कहना आरम्भ करना—

"हे सौभाग्यवती ! मैं तेरे पति का प्यारा मित्र मेघ हूँ । उसका भेजा हुआ सन्देश लेकर मैं तेरे पास उपस्थित हुआ हूँ । मुझमें यह गुण है कि मेरी मन्द मन्द गरज सुन कर विदेशियों के हृदय में अपनी पत्नियों की वेणी खोलने की उत्कण्ठा बड़ी अधिकता से उत्पन्न हो जाती है—इतनी अधिकता से कि वे लोग मार्ग में यथेष्ट विश्राम किये बिना ही बड़ी शीघ्रता से अपने घर लौटने की चेष्टा करते हैं ।"

तेरे मुख से ऐसा वचन सुन कर उसका हृदय उत्कण्ठा से परिपूर्ण हो जायगा और वह अपना सिर उठा कर तुझे इस तरह आदरपूर्वक देखेगी जिस तरह कि पवन-पुत्र हनूमान को मैथिली ने देखा था फिर वह　　　　के खूब ध्यान लगा कर

तेरा कथन सुनेगी। बात यह है कि पति के मिलाप से पत्नी को जो आनन्द प्राप्त होता है उससे कुछही कम आनन्द मित्र के द्वारा उसका सन्देश पाने से प्राप्त होता है। जब वह उन्मुख होकर ध्यान से तेरा कथन सुनने के लिए तैयार हो जाय तब तू मेरा सन्देशा सुना कर उस पर उपकार करना। परन्तु मेरे सन्देश का कोई अंश छूटने न पावे; उसे अपनी तरफ़ से बढ़ा कर कहना, घटा कर नहीं। देख, तू यह कहना—

"हे देवी! तेरा पति रामगिरि नामक पर्वत पर रहता है। वह कुशलपूर्वक है और तुझ वियोगिनी का कुशल-समाचार पूछता है। जितने शरीरधारी प्राणी हैं, काल सबके सिर पर चौबीसों घण्टे नाच रहा है; पल भर भी किसी की खैर नहीं। नहीं मालूम किस समय वह किसे धर दबावे। अतएव, सबसे पहले अपने प्रेमी का कुशल-वृत्तान्त पूछना चाहिए। वैरी विधाता ने, शाप के कारण, तेरे पति के आने का मार्ग रोक दिया है। वह बेबस दूर परदेश में पड़ा है। तू कहीं यह न समझना कि वह सुख से है। नहीं, उसकी दशा तुझसे भी अधिक दयनीय है। मानसिक सङ्कल्पों से ही नहीं, शरीर से भी वह अत्यन्त दीन है। तू दुबली है, वह तुझसे भी अधिक दुबला है। तू वियोगाग्नि में तप रही है; वह तुझसे भी अधिक तप रहा है। तू दुःखाश्रु बहाती है, उसकी आँखों से दुःखाश्रुओं की सतत धारा बहती है। तू उससे मिलने के लिए उत्कण्ठित है; उसकी उत्कण्ठा तुझसे भी अधिक है। तू लम्बी उसासें लेती है; उसकी उसासें तुझसे भी अधिक लम्बी हैं। सारांश यह कि उसकी वियोग-विषयक व्याकुलता तेरी

व्याकुलता से भी बहुत अधिक बढ़ी चढ़ी है और वह बड़े ही कष्ट से अपने दिन काट रहा है। जब वह तेरे पास था तब सखियों के सामने कही जाने योग्य बात भी, वह तेरे कान में इसलिए कहने दौड़ता था कि इसी बहाने तेरे मुख-स्पर्श का सुख उसे मिले। सो वही आज दैवयोग से तुझसे इतनी दूर जा पड़ा है कि 'न तो वहाँ से यहाँ तक दृष्टि ही की गति है और न श्रुति ही की—न तो वह तुझे देखही सकता है और न तुझसे दो बातें ही कर सकता है! इसी से वह और भी खिन्न रहता है और इसीसे तुझसे मिलने की उत्कण्ठा उसके हृदय में और भी बढ़ रही है। तुझसे अपनी करुण-कथा कहने का और कोई द्वार न देख उसने बड़े चाव से कुछ पद्य बना कर मुझे याद करा दिये हैं। उन्हीं को मैं तुझे सुनाता हूँ। तू सावधान होकर उन्हें मेरे मुख से सुन"—

"प्रिये! मैं दिन रात तेरे रूप का चिन्तन किया करता हूँ और दर्शनों से अपने नेत्र कृतार्थ करने के लिए तेरी समता ढूँढ़ने में लगा रहता हूँ। तेरे अङ्ग की समता मुझे प्रियङ्गु-लताओं में मिल जाती है, तेरी चितवन की समता चकित हरिणियों की चितवन में मिल जाती है, तेरे कपोलों की समता चन्द्रमा में मिल जाती है; तेरे केशों की समता मोर-पंखों में मिल जाती है, और तेरी भौंहों की मरोड़ की समता नदी की पतली पतली चञ्चल तरङ्गों में मिल जाती है। परन्तु, हाय हाय! तेरे सर्वाङ्ग की समता किसी एक वस्तु में कहीं भी एकत्र देखने को नहीं मिलती।

"मैं कभी कभी मनही मन यह अनुमान करता हूँ कि तू मुझसे रूठ कर मानिनी बन बैठी है इससे तुझे मनाने के लिए मैं पत्थर

की शिला पर गेरू से तेरा चित्र खींचता हूँ। परन्तु ज्योंही मैं अपना सिर तेरे चरणों पर रखना चाहता हूँ त्योंही मेरी आँखों में आँसू उमड़ आते हैं और मेरी दृष्टि रुक जाती है—मुझे तेरा चित्रही नहीं दिखाई देता। मुझे न मालूम था कि कृतान्त इतना क्रूर और इतना निर्दयी है। वह तो हम दोनों के चित्र-मिलाप को भी नहीं देख सकता। निठुरता की हद हो गई।

'मेघों की पहली जल-धारा से सींची गई भूमि की सुगन्ध के सदृश सुगन्धिवाले तेरे मनोहारी मुख से दूर रहने के कारण से तो योंही क्षीण—यों ही अस्थिपञ्जर—हो रहा हूँ। परन्तु पञ्चशायक को मुझ पर फिर भी दया नहीं आती। वह मुझ क्षीण पर भी बाण बरसा कर और भी क्षीण कर रहा है; वह तो मरे को मारने पर उतारू है। उसके इस पराक्रम को धिक्! खैर, ग्रीष्म-ऋतु तो किसी तरह बीत गई। अब तो वर्षा-ऋतु आई है। सूर्य का ताप कम हो गया है। आकाश में सर्वत्र बादल उमड़ रहे हैं। अब तक जैसी बीती, बीत गई। अब ये वर्षा के दिन कैसे कटेंगे?

'मेरी सदा यह कामना रहती है कि स्वप्न में ही तू मुझे मिल जाय। परन्तु मेरी यह इच्छा बहुत कम फलवती होती है। यदि सौभाग्य से कभी तू मुझे स्वप्न में मिल जाती है तो मैं तेरा गाढ़ आलिङ्गन करने के लिए उतावला होकर अपनी दोनों बाँहें फैलाता हूँ। मुझे ऐसा करते देख वनदेवियों को तरस आता है। वे मेरी विकलता और दीनता देख कर दया से द्रवित हो जाती हैं और आँखों से मोतियों के समान बड़े बड़े आँसू बहाने लगती हैं। उनके ये आँसू तरुओं के नवल पल्लवों पर घण्टों गिरा करते हैं।

'कभी कभी उत्तर से दक्षिण को वायु चलने लगती है। वह वायु बर्फ़ से ढके हुए हिमालय के शिखरों के ऊपर से आती है। अतएव बहुत ठंडी होती है। हिमालय पर देवदारु के वृक्ष बहुत हैं। उनकी कोंपलों को तोड़ती हुई जब यह वायु बहती है तब उनके दूध के स्पर्श से सुगन्धित भी हो जाती है, क्योंकि देवदारु के दूध में बड़ी सुन्दर सुगन्धि होती है। हे गुणवती! इस सुगन्धि-भरी और शीतल वायु को मैं बड़े ही प्रेम से अङ्क लगाता हूँ। बात यह है कि मेरे मन में आता है कि कहीं यह तेरे अङ्गों को छूकर न आई हो। मेरी उत्कण्ठा का यह हाल है कि तेरी स्पर्श की हुई वस्तुओं के समागम को भी मैं बहुत कुछ समझता हूँ।

'तुझसे वियुक्त होने के कारण मैं बड़ी ही भीषण व्यथायें सह रहा हूँ। वे इतनी सन्ताप-कारिणी हैं कि उनके कारण मेरा शरीर दहकता सा रहता है। हाय! मैं अपनी रक्षा के लिए किसकी शरण जाऊँ? हे मृगनयनी! मेरी दशा तो विक्षिप्त के सदृश है। मेरे मन का यह हाल है कि व्याकुलता के कारण वह असम्भव को भी सम्भव समझता है। वह अत्यन्त दुर्लभ क्या, अलभ्य, पदार्थों की प्राप्ति की भी इच्छा करता है। वह यह सोचता रहता है कि इतनी लम्बी लम्बी रातें किस तरह एक क्षण के समान कट जायँ और दिन प्रातःकाल से सायङ्काल तक, किस तरह बहुत ही कम कष्टदायक हो। भला ये बातें क्या कभी सम्भव हैं? मुझ वियोगी को न दिन को चैन, न रात को चैन। आठ पहर चौंसठ घड़ी तड़पते ही बीतता है।

'मैं मनही मन तरह तरह की कामनायें किया करता हूँ। तुझसे मिलने पर मैं यह करूँगा मैं वह करूँगा—यही दिन रात

मैं अपने मन में गुना करता हूँ। इसी तरह बड़े चाव से मैं शाप के दिन गिन रहा हूँ और अपने प्राणों को रख रहा हूँ। तू भी ऐसा ही कर। तू भी धीरज धर, और जैसे हो सके वियोग के दिन काट दे। हे कल्याणी! कातर न हो। सुख-दुःख सदा एक सा नहीं रहता। जिसे दुःख मिलता है उसे सुख भी मिलता है। रथ के पहिये की तरह ये दोनों क्रम क्रम से फिरा करते हैं; कभी सुख सामने आ जाता है कभी दुःख।

'कार्तिक की प्रबोधिनी (देवठानी) एकादशी को, जब शारङ्गपाणि भगवान् विष्णु शेषशय्या से उठेंगे, कुबेर के शाप का अन्त हो जायगा। अब केवल चार ही महीने बाकी हैं। इन महीनों को भी तू किसी तरह आँख मूँद कर काट दे। शाप की अवधि समाप्त होने पर, शरच्चन्द्र की चन्द्रिका छिटकी हुई रातों में, हम दोनों फिर मिलेंगे। दुःखदायी वियोग ने हमारे हृदयों पर परस्पर मिलने के जिन अभिलाषों को बहुत ही बढ़ा दिया है वे सब उस समय अच्छी तरह पूर्ण हो जायँगे। हम लोग आज-कल जो तरह तरह की कामनायें कर रहे हैं वे उस समय सभी सफल हो जायँगी। जो बातें इस समय मनोमोदक हो रही हैं उनका सुखोपभोग उस समय हमें प्रत्यक्ष प्राप्त हो जायगा। अतएव धीरज न छोड़। कुछ समय तक और ठहर।

'मैं एक बात की याद दिलाता हूँ। एक दिन तू सुख से सो रही थी। इतने में तू अकस्मात् जाग पड़ी और रोने लगी। मैंने बार बार पूछा—क्या हुआ? क्यों रोई? बता तो। तब तूने मुस-

कराते हुए कहा—हे छली ! मैंने स्वप्न में तुझे किसी स्त्री का हाथ पकड़ते देखा था।

'यह रहस्य की बात है। इसे मेरे सिवा और कोई नहीं जानता। इसे मैं इसलिए कहता हूँ, जिससे तुझे विश्वास हो जाय कि मैं सकुशल हूँ और यह सन्देश मेरा ही भेजा हुआ है। तू पड़ोसियों और पुरवासियों की चर्चा पर ध्यान न देना। लोग यदि कहें कि जीता होता तो अवश्य आता अथवा चिट्ठी ही भेजता तो उनकी बात पर विश्वास न करना। विद्वानों का कहना है कि वियोग में पारस्परिक प्रेम कुछ कम होजाता है—अपना स्नेही पास न रहने पर स्नेह कुछ घट जाता है—परन्तु प्रेमपात्र के दर्शनों से वह पहले से भी अधिक बढ़ जाता है। वियोग के कारण मिलाप की उत्कण्ठा अधिक हो जाती है और प्रेमी अनेक प्रकार की कामनायें करता हुआ बड़े चाव से अपने प्रेमपात्र की प्रतीक्षा करता है।'

बस यही मेरा सन्देश है। इसको मेरी प्रियतमा तक पहुँचा देना—मुझे अपना बन्धु समझकर मेरा यह काम कर देना। तूने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली या नहीं, यह मुझे अब तक ज्ञात ही न हुआ। क्योंकि तू कुछ बोला नहीं। परन्तु मेरी समझ में तेरी चुप का यह अर्थ नहीं कि तुझे इससे इनकार है। चातक तुझसे सदाही जलदान की याचना करते हैं। तू उनकी इच्छापूर्ति तो कर देता है, पर बोलता नहीं। बिना गरजे ही—बिना बोले ही—तू उनका काम करता है। सज्जनों की यही रीति है। वे उत्तर दिये बिना ही अपने प्रेमी—अपने भक्त-याचकों की प्रार्थना सफल कर देते हैं। अभीष्ट-कार्य की पूर्ति को ही वे उत्तर समझते हैं

मेरी अर्द्धाङ्गिनी पर वियोग की यह पहली ही व्यथा पड़ी है। इसी से वह बड़ी ही उग्र शोकाग्नि में मग्न होगी। मेरा सन्देश सुना कर उस दुखिया का दुःख कम कर देना—उसे धीरज देना। फिर, जिस कैलास-पर्वत के शिखरों को शिवजी का वाहन बैल अपने सींगों से खोदा करता है उससे उतर पड़ना। मेरा सन्देश सुनाकर जिस तरह तू मेरी पत्नी के प्राणों की रक्षा करेगा उसी तरह उसका सन्देश तथा उसका कोई चिह्न लाकर मेरे भी प्राणों की रक्षा करना। भूलना मत। लौट कर मेरे पास अवश्य आना। कुन्द के कुम्हलाये हुए प्रातःकालीन कुसुम के सदृश मेरे जीवन की रक्षा तेरे ही हाथ है।

मुझे अपना सखा समझ कर, सखा न सही व्यथित वियोगी समझ कर, अथवा वो भी न सही दीन-दुखिया और दया-पात्र समझ कर, मेरा इतना काम कृपा करके अवश्य कर देना। यह मित्रों ही के करने योग्य है। मेरी इस विनीत प्रार्थना को सफल कर चुकने पर वर्षा-ऋतु-सम्बन्धिनी शोभा से संयुक्त होकर जहाँ—जिस देश, जिस प्रान्त में—तेरा जी चाहे वहाँ आनन्द से विचरण करना। जिस तरह मुझे अपनी प्रियतमा पत्नी के वियोग का दुःख उठाना पड़ा है उस तरह, भगवान् करे, तुझे तेरी प्यारी बिजली के वियोग का दुःख कभी, पल भर के लिए भी, न उठाना पड़े।

इति।